रसराज

जिस में

رس راج

दोहे और कवित्त आदि सुललित छन्दों
में नायका भेद वर्णन है

जिसको

स्वस्ति श्री गुणि गण मण्डली मण्डन महा महो पा-
ध्याय श्री कवि मति राम जी ने रसिक जनोंके मनो
रञ्जनार्थ वर्णन किया है

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवल किशोर के छापे खाने में छापागया

जुलाई सन् १८८७ई०

रस राज

जिस में

दोहे और कवित्त आदि सुललित छन्दों
में नायका भेद वर्णन है

जिस को

स्वस्ति श्री गुणिगण माण्डली मण्डन महा महो पा-
ध्याय श्री कवि मति राम जी ने रसिक जनों के मनो
रञ्जनार्थ वर्णन किया है

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवल किशोर के छापे खाने में छापागया
जुलाई सन् १८८० ई॰

Price -/2/-

श्री गणेशाय नमः

अथ रस राज प्रारम्भः

कवित्त

ध्यावैं सुरा सुर सिद्ध समाज महेशहिं आदि महा मुनि ज्ञानी जोग में यंत्र में मंत्र में तंत्र में गावैं सदा कृति शेष भवानी। संकट भाजन आनन की दुति सुन्दर दंड उदंड सो जानी। ध्याय सदा पद पंकज को मतिराम तबै रस राज बखानी। दोहा। श्री गुरु चरण मनाइ के गणपति को उर ध्याइ। रसिक हेत रसराज किय सुकबिन को सुखदाइ। २। प्रार्थना दोहा। कवितार्थ जानो नहीं कछुक भयो संबोध। भूल्यो भ्रमते जो कछुक सुकवि पढ़ेंगे सोध॥ ३॥ बरनि नायका नायकनि रच्यो ग्रन्थ मतिराम। लीला राधा रवन की सुन्दर यश अभिराम। ४। दोहा। होत नायका नायकहिं आलंबित श्रृंगार। ताते बरनौ नायका नायक मति अनुसार। ५। उपजत जाहि बिलोकि के चित्त बीच रस भाव। ताहि बखानत नायका जे प्रवीन कबिराव। ६। उदाहरण कवित्त। कुन्दन कौ रंग फीको लगै झलकै छवि अंगन चारु गुराई। आंखिन में अलसानि चितौनि में मंजु बिलासन की सरसाई। को बिन मोल बिकान नहीं मतिराम। लहै मुसकान मिठाई। ज्यों ज्यों निहारिये नेरे ह्वै नैननि त्यों त्यों खरी निकरैसी निकाई। दोहा। जाल रंध्र मग ह्वै कढ़े तिय तन दीपति पुंज। झिंझियां कैसो घर भयो दिन हीमें बन कुंज। ८। कही ना-

यका तीन विध प्रथम स्वकीया मान। परकीया पुनि दूसरी गणिका तीजी जान। ९। स्वकीया लक्षण दोहा। लाजवती निश दिन पगी निज पति के अनुराग। कहत स्वकीया सील मय ताको पति बड़ भाग॥ ॥१०॥ उदाहरण कवित्त॥ संचि विरंचि निकाई मनोहर लाजति मूरत मंत वनाई। तापर तो बड़ भाग बड़े मति राम लसें पति प्रीति सुहाई। तेरे सुशील सुभाव भटू कुल नारिन को कुल कानि सिखाई। नेहीं जने पति देवत के गुण गौरि सबै गुन गौरि पढ़ाई। ११। दोहा। जानति सौति अनीत है जानति सखी सुनीति। गुरु जन जानति लाज है प्रीतम जानति प्रीति। १२। दोहा। त्रिविधि स्वकीया जानियो प्रथमहिं मुग्धा नाम। मध्या पुनि प्रौढ़ा गिनो बरनत कवि मति राम। १३। अभि नव योवन आगमन जाके तन में होय। ताको मुग्धा कहत हैं किबि कोबिद सब कोय। १४। उदाहरण कवित्त। नेकु मन्द मधुर कपोल मुसक्यान लागे नेक मंद गमन गयंदन को चाल भो। ईंचकन ऊंचो लगो अंचल उरोजन के अंकुरनि बंक दीठि नेकसे बिसाल भो। मति राम सु कवि रसीले कछु बैन भए बदन सिंगारस वोली आलवाल भो। वाल तन योवन रसाल उलह्यो लखि सौतिन के साल भो निहाल नन्द लाल भो। १५। दोहा। अभिनव योवन जोति सों जगं मग होत विलास। तिय के तन पानिप बढ़े। पिय के नैननि प्यास। १६। दोहा। मुग्धा के द्वै भेद बभाषत सु कबि सुजान। एक अज्ञातक योवना ज्ञात योवना जान। १७। अज्ञान योवना लक्षणं। दोहा। निज तन योवन आगमन जो नहिं जानत नारि। सो अज्ञातक योवना कवि वरनत निरधारि। १८। उदाहरण कवित्त। खेलत चोर मिही चनी आजु गई हुती पाछिले द्योस की नाई। आली कहा कहो एक भई मति राम

नई यह बात तहाँई। एकहि भौन दुरे इक संगही अंग सों अंग। छुवायो कन्हाई। कंप छुट्यो घन स्वेद बढ़्यो तन रोम उठ्यो अँखियां भरि आँई।१९। दोहा। लाल तिहारे संग में खेलैं खेल बलाइ। मूंदत मेरे नैन हो करन कपूर लगाइ।२०। ज्ञात यौवना लक्षण। दोहा। निज तन यौवन आगमन जानि परति है जाहि। कवि कोविद सब कहत हैं ज्ञात यौवना ताहि।२१। उदाहरण कवित्त। कानन लों लागे मुसकान प्रेम पागे लोने लाल भरे लागे लोचन अनङ्ग तें। भारु धरि भुजनि डुलावति चलति मन्द औरें ओप उलहत उरु उनंग तें। मतिराम यौवन पवन की झकोर आप बढ़ के सरस रस तरल तरंग तें। पावक बिमल की झलक झलकन लागी काई सी गई है लरकाई कढ़ि अङ्ग तें।२२। दोहा। इत उते सचकित चिते चलत डुलावत बांह। दीठ बचाई सखिन की छनकु निहारति छांह।२३। अथ नवोढ़ा लक्षण। दोहा। मुग्धा जहि भय लाज युत रति न चहे पति संग। ताहि नवोढ़ा कहत हैं जे प्रवीन रस रंग।२४। उदाहरण कवित्त। साथ सखी के नई दुलही को भयो हरि को हियो हेर हिमञ्चल। आय गये मतिराम तहां धर जानि इकंत अनन्द सों चंचल। देखत ही नंदलाल को बाल के पूरि रहे असुवानि दृगंचल। बात कही न गई सुरही गहि हाथ दुहों सों सहेली को अंचल।२५। दोहा। ज्यों ज्यों परसे लाल तन त्यों त्यों राखे गोइ। नवल बधू डर लाज तें इन्द्र बधू सी होइ।२६। अथ विस्रब्ध नवोढ़ा लक्षण। दोहा। होय नवोढ़ा के कछुक प्रीतम सों परतीति। सो विस्रब्ध नवोढ़ा यों बरनत कवि रस रीति।२७। उदाहरण कवित्त। केलि के राति अघाने नहीं दिनहीं में लला पुनि घात लगाई। प्यास

लगि कोउ पानी दै आउ यों भीतर बैठि कै बात सुनाई। जिठनी प-
ठाय गई दुलही हँसि हेरि हरें मतिराम बुलाई। कान्ह के बोल में
कान न दीनों सुगेह के देहरी में धरि आई। २८। दोहा। मीतम।
तुम्हरी सेज पर हों आवत नन्द लाल। दया गहो दामन कहौं दु-
ख न दीजिये लाल।२९। अथ मध्या लक्षण दोहा। जाके नन में
होत है लाज मनोज समान। तासों मध्या कहत हैं कवि मति रा-
म सुजान।३०। उदाहरण कवित्त। चित में विलोकत हीं लाल
को बदन बाल जीते जेहि कोटि चन्द सरद पुनीन के। मुसक्यान
अमोल कपोलनि के रुचि छन्द चमकें तखोनानि के रुचिर दु-
तीन के। मीतम निहास्यो बाहन हन अबान कही जामें मति
राम मन सकल मुनीन के। गाढ़े गहो लाज मैन कढ़त है फि-
रत बैन मूल छूे फिरत नैन वारि बरुनीन के।३१। दोहा।
केलि भौन के देहरी खड़ी बाल छबि नोल। काम कलित हि-
य को लहै लाज ललित हग कोल।३२। अथ प्रौढ़ा लक्षण।
दोहा। निज पतिसों रति केलि की सकल कलानि प्रवीन।
तासों प्रौढ़ा कहत हैं जे कवित्त रस लीन।३३। उदाहरण।
कवित्त। प्राण प्रिया मन भावन संग अनंग तरंगनि रंग प-
सारे। सारी निसा मतिराम मनोहर केलि के पुंज हजार उ-
घारे। होत प्रभात चल्यो चहै मीतम सुन्दरि के हिय में दु-
ख भारे। चन्दसों आनन दीप सी दीपति स्याम सरोज से।
नैन निहारे।३४। दोहा। लपटानी अति प्रेम सों दै उर
उरज उतंग। घरी एकली छुटे पर रही लगीसी अंग॥ अ-
थ धीरा भेद लक्षण। दोहा। मध्या प्रौढ़ा मान में तीन भांति
पुनि जानि। धीरा बहुरि अधीर तियं धीरा धीरा मानि।३६।

अथ मध्या धीरा लक्षण। दोहा। वचनन की रचनानि सों पियहि जनावे कोप। मध्या धीरा कहत हैं ताहि सुमति रस चोप। ३७। उदाहरण कवित्त। तुम कहा करो कहूं काम तें अटकि परे तुम्हैं कौन दोष सोतो आपने यो भाग हैं। आये मेरे भौन बड़े। भोर उठि प्यार हीनें अति हरबरन बनाय बांधी पाग हैं। मेरे ही वियोग रहे जागनि सकल राति गात अलसात मेरो परम सुहाग हैं। मनहूं की जानी प्राण प्यारे मतिराम इह नैन वहीं माहिं पाययतु अनुराग हैं। ३८। दोहा। अजो उड़ावत हौ नहीं पीर न होत सभाग। ठौर ठौर या भौंर के डसे अधर दल दाग। ३९। अथ मध्या अधीरा लक्षण। दोहा। मध्या कहिय अधीर तिय बोले बोल कठोर। पियहि जनावे कोप यों वरनत कवि शिर मोर। ४०। उदाहरण कवित्त। कोऊ नहीं बरजे। मतिराम रहो तितही जितही मन भायो। काहे को सोहैं हजार करो तुम तौ कबहूं अपराध न ठयो। सोवा न दीजे हमें दुख योंहीं कहा रस बाद बढ़ायो। मान रह्यौ इन हीं मन मोहन माननी होइ सो मान मनायो। ४१। दोहा। बलय पीठि तर वुन भुजन उर कुच कुंकुम छाप। तिते जाव मन भावते जिते बिकाने आप। ४२। अथ मध्या धीरा धीर लक्षण। दोहा। मध्या धीरा धीर तिय ताहि कहत सब कोप। पिय सों कहि के बचन कछु रोस जनावे रोय। ४३। उदाहरण कवित्त। आजु कहा तजि बैठी हो भूषण ऐसे हीं अंग कछूक रसीलो। बोलन बोल रुखाई लिये मतिराम सुने ने सनेह सीलो। क्यों न कहौ दुख प्राण प्रिया अंसुवानि रहे भरि नैन लजीलो। कौन तुम्हें दुख

है बिन के तुम से मन भावन छैल छबीलो । ४४। दोहा । तुम सों कीजे मान क्यों वह नायक मन रञ्ज । बात कहत यों बोलके भरि आए दृग कञ्ज । ४५। अथ प्रौढ़ा धीरा लक्षण । ।दोहा । पिय सों प्रगटन रिस करे रति तें रहे उदास । प्रौढ़ा धीरा जानिये सो निज सुमति बिलास । ४६। उदाहरण। । कवित्त । वैसे ही चितै के मेरे चित्त को चुरावति हो बोलति हो वैसे ही मधुर मृदु बानि सों । कवि मति राम अङ्क भरति मयंक मुखी वैसे ही रहति गहि भुज लेति कान सों। चूमति कपोल पान करत अधर रस वैसे ही निहारी रीति सकल कलानि सों । कहा चतुराई ठानियत प्राण प्यारी तेरे मान जानियत रूखी मुख मुसक्यानि सों । ४७। दोहा । ढीली बाहन सों मिली बोली कछून बोल । सुन्दरि मान जनाइहैं लियो प्राण मति मोल । ४८। अथ प्रौढ़ा अधीरा लक्षण दोहा । डरदेके पिय को प्रिया देय सुमन की मार । प्रौढ़ अधीरा कहत हैं ताहि सुकवि मति चारु । ४९। उदाहरण।कवित्त । जाके अङ्ग अंग की निकाई निरखत आली वारने अनंगकी निकाई कीजियतु हैं । कवि मति राम जाकी चाह व्रजनारि न को देह अंसुवान के प्रवाह भीजियतु हैं । जाके बिनु देखे न पल कल तुमहूं को जाके बैन सुनत सुधा सों पीजियतु हैं । ऐसे सुकुमार पिय नन्द के कुमार को यों फूलनि की मालनि की मार दीजियतु हैं । ५०। दोहा। जहां जहां सखि देत तू फूलमाल की मार । तहां तहां नंदलाल के उठे रोस तन चारु।५१। अथ प्रौढ़ा धीरा धीर लक्षण । दोहा। रति उदास है नाह को डरु दिखलावे बाम । प्रौढ़ा धीरा धीर तिय बरनत कवि मति राम

।५२। उदाहरण कवित्त। पीतम आवे प्रभात प्रिया कहो रति रंभे। रति चिन्ह लिये हीं। बैठि रही पलंगा पर सुन्दरि नैन नवाइ के धीर। धरे हीं। बाँह गहै मतिराम कहै न रही रिस मानिनि के हद केहीं। बोली नबोल कछू सतराय पै भौंहैं चढ़ाय तकी तिरछोहीं।५३। दोहा। आवत उठि आदर कियो बोलि बोल रसाल। बाह गहत नंदलाल के भये लाल दृग लाल।५४। अथ ज्येष्ठा कनिष्ठा लक्षण। दोहा। बरनत ज्येष्ठ कनिष्ठिका यह है ब्याही नारि। प्रथम पियारी दूसरी घटि प्यारी निरधारि।५५। उदाहरण कवित्त। बैठी एक सेज पै सलोनी मृग नयनी दोऊ आनि तहां पीतम सुधा समूह बरसे। कवि मतिराम दिग बैठ्यो मन भावन के दुहूं के हिये में अरविन्द मोद सरसे। आरसी दै एक सों कह्यो यों निज मुख लख्यो अरविन्द वारिज विलास बरसे। रूप सो भरी जौलौं दरपन देखे तौलौं प्यारे प्राण प्यारी के उरोज हरि परसे। दोहा। बेनी गूंदत एक की नन्दलाल चित लोल। चूमत प्यारी के अधर विहसत गोल कपोल।५७। अथ परकीया वर्णनं। दोहा। प्रेम करे पर पुरुष सों परकीया सो जानि। दोय भेद ता प्रथम बहुरि अनूढ़ा। मानि।५८। ब्याही और पुरुष सों और सों रत लीन। ऊढ़ा तासों कहत हैं कवि पण्डित परवीन।५९। उदाहरण। कवित्त। क्यों इन आंखिन सों निरसंक है मोहन को तन पानिय पीजे। नेकु निहारे कलङ्क लगे इह गांव बसे कहु कैसे के जीजे। होत रहे मन यों मतिराम कहूं बन जाय बड़ो तप कीजे। है बनमाल हिये लगिये अरु है मुरली अधरा रस लीजे।६०। दोहा। कन्त चौकसी मन्न की बैठी गांठि जुराइ। पेखि परोसी को पिया घूंघट में मुसक्या

३। ६१। अनूढ़ा लक्षण। दोहा। अनव्याही कहु पुरुष सों अनुरागी जो होइ। ताहि अनूढ़ा कहत हैं कवि कोविद सब कोइ। ६२। उदाहरण। कवित्त। गोप सुता कहैं गौरि गुसाइन पांय परों बिनती सुनि लीजै। दान दया निधि दासी के ऊपर नेकु सुचित्त दया रस भीजै। देहि जो ब्याहि उछाह सो मोहन मात पिताहु के सोभन कीजै। सुन्दर सांवरो नन्द कुमार बसे उर में बर सो बरु दीजै। ६३। दोहा। मै सुनि आई नन्द घर अब तू होहु निसंक। राधे मोहन ब्याह नें जैहैं धोय कलंक। ६४। परकीया और भेद। दोहा। परकीया के भेद इह गुप्त जो प्रथम बखानि। बहुरि विदग्धा लक्षिता कुलटा मुदिता मानि। ६५। दोहा। और अनूसयना कही तिन के बिबिध बिबेक। बरनत कबि मतिराम यह रस सिंगार को सेक। ६६।। सुरत गुप्ता लक्षणम्। दोहा। सुरत छिपावे जो तिया सो गुप्ता उर आनि। बरनत कवि मतिराम है चतुराई की खानि। ६७। उदाहरण। कवित्त। लेन गई हती बागही फूल अँधारी लखैं डर बाढ़्यो तहांई। रोम उठ्यो तन कम्प छुट्यो मति। राम भई भ्रमकी सरसाई। देखिन में उरझी अँगिया छतियां अति कंटक के छत छाई। देह में नेकु संभार रह्यो। नहिं ह्वां लगि भाजि मरू करी आई। ६८। दोहा। भलो नहीं यह केवरो सजनी गेह अराम। बसन फटे कंटक लगे निस दिन आठो याम। ६९। अथ विदग्धा भेद। दोहा। द्विविध विदग्धा कहत हैं कवि करि बिमल बिबेक। बचन विदग्धा एक है क्रिया विदग्धा एक। ७०। अथ दुहुन के भेद लक्षण म। दोहा। करे वचन सों चातुरी बचन विदग्धा मानि। करे।

क्रिया सों चातुरी क्रिया विदग्धा जानि । ७२ । अथ बचन । बिदग्धा को उदाहरण । कवित्त । आई है निपट सांझ गैया गई घर मारू ह्वांने दौरि आई मेरो कह्यौ कान्ह कीजिये । मैं तो हूं अकेली और दूसरो न देखियत बन की अंध्यारी सों अधिक भय भीजिये । कवि मतिराम मन मोहन सों पुनि पुनि राधिका कहत बात सांची ये पतीजिये । कब की हों हेरति न हेरे हरि पावति हों बछरा हिरानो सो हिराय नेकु दीजिये । दोहा । खेत निहारे धान को यों बूझत मुसकाय । इहो हमारो है कहो सघन उखार दासाय । ७३ । अथ क्रिया विदग्धा उदाहरण । कवित्त । बैठी तिया गुरु लोगनि में रति सों अति सुन्दर रूप बिसेषी । आयो तहां मतिराम सुजान मनो भव ते अति कंत उरेषी । लोचन रूप पियोई चहे अरु लाजनि जानि नहीं छबि पेषी । नैन नवाइ रही हिये माल में लाल की मूरति लाल में देखी । ७४ । दोहा । चढ़ी अटारी बाम वह किया प्रनाम निरखोट । तरनि किरन तें दृगन की कर सरोज करि ओट । ७५ । अथ लक्षिता लक्षण । दोहा । होत लखाई सखिन को जाको पिया सों प्रेम । ताहि लक्षिता कहत हैं कबि कोबिद करि नेम । ७६ । उदाहरण । । कवित्त । आई हों पाय दिवाय महावर कुंजन तें करि कै सुख सैनी । सांवरो आजु संवारे है अंजन नैननि को लखि लाज नरैनी । बात के बूझत ही मतिराम कहा करिये वह भौंह तनेनी । मूंदी न राखत प्रीति अली यह मूंदी गोपाल के हाथ की दीनी । ७७ । दोहा । सनरोही मोहन नहीं दुरे दुराए नेह । होत नाम नन्दलाल के दीप मालसी देह । अथ कुलटा लक्षणम् । दोहा । जो चाहति बहु नायकनि सरस सुरति पर

प्रीति। तासों कुलटा कहत हैं लखि ग्रंथन की रीति। ७९। उदाहरण। कवित्त। अंजन दै निकसी मति नैननि मंजन कै। अति अंग संवारे। रूप गुमान भरी मग में पगही के अंगूठा। अनोट सुधारे। यौवन के मद सों मतिराम भई मतवारिन लोगनिहारे। जात चली यह भांति गली बिथुरी अलकैं अचरान संवारे। ८०। दोहा। मोहि मधुर मुसकानि सों सबै गाँव के छैल। सकल सैल बन कुंज में तरुनि सुरति की सैल। ८१। अथ नष्ट संकेत अनुसयना लक्षण। दोहा। केलि करै जहं। कंत सों सो थल नष्ट्यो निहारि। कहि अनुसयना तासु सों शोच करै जा नारि। ८२। उदाहरण। कवित्त। आई ऋतु पावस। अकास आठों दिशानि में सोहत स्वरूप जल धरन की भीर को। मतिराम सुकवि कदंबन की वासयुत सरस बढावै। रस परस समीर को। भौनते निकसि वृषभान की कुमारि देख्यो तासु में सहेट को निकुंज गिरे तीर को। नागरि के नैननि में नीर को प्रवाह बाढ्यो देखत प्रवाह बाढ्यो यमुना के नीर को। ।८३। दोहा। ग्रीषम ऋतु में देखि के बन में लगी दवारि। एक अपर बन बान यह मन में जरति गंवारि। ८४। अथ भाविस्थान सन्देह अनुसयना का लक्षण। दोहा। होन हार संकेत को शोच करै जो नारि। एहो अनुसयना कही होइ हिये दुख भारि। ८५। उदाहरण। कवित्त। बेलिन सों लपटाय रही हैं। तमालन की अवली अति कारी। कोकिल कूक कपोतन के कुल केलि करै अति आनन्द धारी। शोच करै जनि होहु सुखी मतिराम प्रवीन सबै नर नारी। मंजुल वंजुल कुंजन के घन पुंज सखी ससुरारि निहारी। ८६। दोहा। केलि करै मधु मत्त जहं।

घन मधुपन के पुंज भोर न कलु असासुरे सरदी सघन बन कुंज। ८७। अथ तृतीया स्थान धिष्टिन स्थले रमण गमज्ञानु सयना लक्षण। दोहा। प्रीतम गए सहेट को जाने हेतुहि पाइ एहीं अनुसयना कही होंन गई पछिताइ। ८८। उदाहरण। कबित्त। सांझ के समें में मतिराम काम बस बंधी बंसी बट तट में बजाई जाइ बांसुरी। सुमिरि सहेट वृषभान की कुमारि उर सुख अधिकानो भयो सुख को बिनासुरी। सरसों समीर लाग्यो मुल सी सहेली सब बिष सों बिनोद लाग्यो बन सों निवासुरी। ताप चढ़ि आई तन पीर चढ़ि आई मुख आंखिन के ऊपर उमरि आई आंसुरी। ८९। दोहा। छरी सपल्लव लाल कर लखि तन माल की हाल। कुंभिलानी उरमाल धरि फूल माल ज्यों बाल। ९०। अथ मुदिता लक्षण। दोहा। चित ही सुनि जो बात को मुदित होय जो बाल। मुदिता ताको कहत हैं कवि मतिराम रसाल। ९१। उदाहरण। कबित्त। मोहन सों कुछ दोसनि तें मतिराम बढ्यो अनुराग सुहायो। बैठी हुती निय मायके में ससुरार का काहू संदेश सुनायो। नाहके ब्याह की चार सुनी हिय माहिं उछाह छबीलो के छायो। पोढ़ि रही पट ओढ़ि अटा दुख को मिसु के सुख बाल छिपायो। ९२। दोहा। बिछुरत रोवत दुहन के सखियह रूप लखेन। दुख अंसुआ पिय नयन हैं सुख असुआ तिय नैन। ९३। इति परकीया। अथ गणिका लक्षण। दोहा। धन दे जाके संग में रमे पुरुष सब कोइ। ग्रंथन को मति देखि के गणिका जानो सोइ। ९४। उदाहरण। कबित्त। लाल का चरन रतन छद नख लाल। मोतिन की रतन रही है छबि छाइ कै। कवि मतिराम सुख सुबरन

रूप रही रूप खानि मुसकानि शोभा सर साद के। आनन कोइंदु आनि आंखें अरविन्द मानि इन्द्रिरा रजनि दिन रहति सुहाय के। नायक नवल कौं न देइ तन धन ऐसी सुतन को सुतन अनत धन पाइ के। ९५। दोहा। लसत सजरी ऊजरी विलसत लाल दिजार। हिये हजारन के हरे बैठी बाल बजार। ९६। अथ अन्य नायका भेद लक्षण। दोहा। अन्य सुरत दुखिता कही प्रेम गर्विता जानि। रूप गर्विता और पुनि मानवती उर आनि। ९७। अथ अन्य संभोग दुखिता लक्षणम्। दोहा। निज पति रति के चिन्ह ज्यों लखै और तिय देह। अन्य सुरत दुखिता कहैं करै पेच सों नेह। ९८। उदाहरण। कवित्त। याही को पठाइ बड़ो काम करी आई बड़ी नेरी है। बडई लखें लोचन लजीले सों। सांची क्यों न कहैं कछु मोकों। किधों आपही को पाइ बकसीस लाई बसन छबीले सों। मतिराम सुकवि सदेसो उन मानियतु तेरे नख सिख अङ्ग हरष कटीले सों। नूतो हे रसीली रस बातन बनाय जोवे मेरे जान आई रस राखि के रसीले सों। ९९। दोहा। कहत निहारे रूप यह सखी पैद को खेद। ऊंचो लेति उसास ह्वै कलित सकल तन स्वेद। १००। अथ प्रेम गर्विता लक्षणम्। दोहा। निज नायक के प्रेम सों गर्व जनावे बाल। प्रेम गर्विता कहत हैं सो तो सुमति रसाल। १०१। उदाहरण। कवित्त। गेरे हंसे हंसतु हैं मेरे बोले बोलत हैं मोहि को जानत तन मन धन माणरी। कवि मतिराम भौहै टेढ़ी किये हांसी हूं में छोड़ि देत भूषन बसन पानी पानुरी। मोते मारा प्यारी के न और को कहा तोसों रिस करि कीजे कहि कहांकों सयानुरी। मैंन कामनी के मैंन काहू के न रूप रीझे मैंन काहू के सिखाए आनों मन मानुरी। १०२। दोहा। औरन के पायन रचौ नायनि

जावक लाल। प्राण पियारी रावरी परखनि तुम्हें रसाल। २०३। अथ रूप गर्विता लक्षण। दोहा। जाके अपने रूप को अतिही होय गुमान। रूप गर्विता कहत हैं तासों परम सुजान। २०४। उदाहरण। कवित्त। सोय रही रति अन्न रसीली आनन्द बढ़ाय अनङ्ग तरंगिनि। कुम्हि खोरि करी तिय के तन भीतम और सुबास के संगिनि। जागि परी मतिराम सरूप गुमान जनावति भौंह के भंगनि। लाल सों बोलति नाहिन बाल सुपोंछति आँखि अंगोछति अंगनि। २०५। दोहा। कैसे आऊं हौं उहां है जहं नन्दकिशोर। दिनहूं में मुख चन्द को लखि ललचाति चकोर। २०६। अथ मानवती। लक्षण। दोहा। करै ईर्षा तेजु तिय मन भावन सों मान। मानवती तासों कहत कवि मतिराम सुजान। २०७। उदाहरण। कवित्त। सो मन मोहन होन लई मुख जाके भई विधि की छवि छाजै। खोलिकै नैननि देखै जो नेक तो श्याम सरोज पराजय साजै। जो विहसै मुख सुन्दर तो मतिराम बहान को बारिज लाजै। बोलै अली मृदु मञ्जुल बोल तो कोकिल बोलनि को मद भाजै। २०८। दोहा। सुनियत है मन मानिनी बिन अपराध रिसानि। नेह जरावन को महा दीप ज्योति जिय जानि। २०९। अथ दस नायका वर्णन। दोहा। प्रोषित पतिका खंडिका कलहांतरिता जानि। विप्रलब्ध उत्कंठिता बासक शय्या मानि। २१०। दोहा। स्वाधिन पतिका कहत हैं अभिसारिका सुनाम। कही प्रवत्स्यत प्रेयसी आगत पतिका वाम। २११। दोहा। दसों अवस्था भेद सों दसों नायिका जानि। तिन के लक्षण लक्ष यह नीके कहों बखानि। २१२। अथ प्रोषित पतिका लक्षण। दोहा। जाके पीउ विदेश में बिरह बिकल

तिय होय । प्रोषित पतिका नायिका ताहि कहत सब कोय ।१२३।
अथ मुग्धा प्रोषित पतिका उदाहरण । कवित्त । बार किनेक स-
हेलिन के कहे कैसे हूं लेत न बैरी सवारी । तारदति है कि कहै
मति राम चले असुवा अँखियान तें भारी । प्राण पियारो च-
ल्यो जबतें तबतें कछु औरही रीति निहारी । पीर जनावति
अंगनि में कहि पीर जनावति काहे न प्यारी ।१२४। दोहा ।
पिय बियोग तिय दृग जलधि जल तरंग अधिकाइ । बरुनि
मूल बेला परसि बहुरयो जात बिलाइ । अथ मध्या प्रोषित प-
तिका उदाहरण । कवित्त । चन्द को उद्योत होत नैन चन्द का-
न्त कन्त छायो परदेश देह दाहिनि दहतु है । उसरि गुलाब
नीर कर पुर परसत बिरह अनल ज्वाल जालनि जगतु है ।
लाजनि तें कछु न जनावे काहू सखिन सों उर को उदारि अ-
नुराग उमगतु है । कहा कहों मेरी बीर उठी है अधिक पीर
सुरभि समीर सीरो तीर सो लगत है ।१२५। दोहा । बहुत सू-
री होत क्यों यों बूझी जब सासु । उत्तर कढ्यो न बाल मुख ऊँ-
ची लई उसासु ।१२६। अथ प्रौढ़ा प्रोषित पतिका उदाहरण ।
कवित्त । बिरह तिहारे लाल बिकल भई है बाल नींद भूख
प्यास सिगरी बिसारियत हैं । छोरी कोसो बात चन्द्रमा हूं ते
छिपाई न वसन निनानि के बयारि बारियतु हैं । कहै मति
राम कला धरकीसी कला छिन जीवन बिहीन मीन सी नि-
हारियतु हैं । बार बार सुकुमार फूलन की माल ऐसी मार
के मरोरनि मरोर मारियतु हैं ।१२७। दोहा । चन्द किरनि
लगि बाल तनु उठै आँच यों जागि । दुपहर दिन कर परसि
ज्यों कर दरपन में आगि ।१२८। अथ पर किया प्रोषितपति

का उदाहरण। कवित्त। ह्वां मिलि मोहन सों मतिराम सु केलि करी अति आनन्द भारी। नेई लता द्रुम देखत दुख चलै अंसुआ अंखियान नें भारी। आवति हौ यमुना तट को नहिं जानि परे बिछुरे गिरधारी। जानति हौं सखि आवन चाहत कुंजन तें। कहि कुंज बिहारी। ११९। दोहा। लाल छुटी गेहौ छुट्यो सुख सो छुट्यो सनेह। सखि कहियो वा निठुर सों रही छुटि देह। १२०। अथ गणिका प्रोषित पतिका को उदाहरण। कवित्त। आली सिंगारति है हठ सों परलागत अंग अंगार सिंगारे। पीरी परी तन में मतिराम चले अंखियानि ते नीर पनारे। सोऊ नहीं मन भावत नायक आवत जो बहुते धन वारे। बीर बिलासिनि को बिसरै न बिदेश गयो पिय प्राण पियारो। १२१। दोहा। धन के हेतु बिलासिनी रहे सम्हारे केश। जो तिय के हिय में बसे सो पिय बसे बिदेश। १२२। अथ खंडिता लक्षण। दोहा। पिय तन औरहि नारि के रति के चिन्ह निहारि। दुःखित होय सो खंडिता बरणत सुकवि सुधारि। १२३। अथ मुग्धा खंडिता को उदाहरण। कवित्त। लाल तुम्हें कहूं और तिया की लख्यो अंगिया में लगावति चोवे। ता छिन ते मतिराम न खेलति बूझे सखी नहूं सों दुखगोवे। लिखे करके नख सों पग के नख शीश नवाय के नीचे हीं। जोवे। बाल नबेली न हूस नौ जानति भीतर भौन सो मूनही रोवै। १२४। दोहा। बाल सखिन की सीख ते मानन जानति ठानि। पिय बिन आगम भौन में बैठी भौहैं तानि। १२५। अथ मध्या खंडिता को उदाहरण। कवित्त। जावक लिलार ओठ अंगन की लीक सो है पैयन अलीक लोक लीकन।

बिसारिये । कवि मतिराम छाती नख छत जग मगे उग मगे पग। सूधे मग मैं न धारिये । कस कैं उघारत हौं पलक पलक या- ने पलका में पौढ़ि श्रम रानि को निवारिये । लट पटे पेच शिर बातन कहत तैने लट पटे पेच शिर पाग के सुधारिये । ।१२६। दोहा। कोऊ करो किते कहू तजो नेरव गुपाल । निशि औरन के पग परो दिन औरनि के लाल ।१२७। अथ मोदा खं- डिता को उदाहरण । कवित्त । प्रीतम आये प्रभात प्रिया मुस- क्यान उठी दृग सों दृग जोरे । आगे ह्वै आदर के मतिराम कहैं मृदु बैन सुधा रस बोरे । ऐसे सयान सुभाय नहीं सों मिली मन। भावन सों मन भोरे । मान गो जान तबै अँगिया की तनी न छुटी जब छोरे ।१२८। दोहा। आदर दे पिय सों मिली तिय हिय राखि सयान । दृग गहि बाँधी कंचुकी समझायो मन मान। ।१२९। अथ पर कीया खंडिता को उदाहरण । कवित्त । रावरे ने- ह को लाज तजी अरु गेह के काज सबै बिसरायो । डार दयो गुरु लोगन को डर गाँउ चवाई में नाम धरायो । हितु कियो हम जेतो कहा तुम तो मति राम सबै बिसरायो । कोउ कितेक उपाय करे कहूं होत है आपन पीउ परायो ।१३०। दोहा । हम सों तु- मसों लालइत नैननहीं को नेह । उन प्यारी के दृगनि के स- लिल सींचियत देह ।१३१। अथ गणिका खण्डिता को उदाह- रण। कवित्त । क्यों हमसों मिलबो ठहराय के नैन कहूं अन- ने हीं करीजे । भोरही आय बनाय के बातन चतुर हे बिनती बहु कीजे । ऐसी ए रीति सदा मति राम सो कैसे पियारे जू प्रेम पतीजे। सौंह न खाइये जाइये ह्यांते न मानि हैं तोहूं। जो लाखन दीजे ।१३२। दोहा। कत्त कहा सौंहन करो जानि ।

पस्यौ अब नेह। देन कह्योसो विन दिये जानन पैहौ गेह।२३३।
अथ कलहांतरिता को लक्षण। दोहा। कह्यो न मानै कन्त को
पुनि पाछे पछिताइ। कलहान्तरिता नायका ताहि कहत कवि
राइ।२३४। अथ मुग्धा कलहन्तरिता को उदाहरण। कवित्त।
गौने की चूनरी ग्मी ऐहै दुलही अब होत डिठाइ नगारी। आ
उ बनावन आए हैं आपने हाथ सों आनन पाग संवारी। पाय
परे मतिराम लला मनु हारि करी कर जोरि हहारी। आपही मा
न्यो मनायो न काहू कों आपही रवात न पान पियारी।२३५।
दोहा। आई गौने कालिही सीखे कहा सयान। अबही ने रूसन ल
गी अबहीते पछितान।२३६। अथ मध्या कलहान्तरिता को उ-
दाहरण। कवित्त। पायन आय परे तो परे रहे केती करी मनुहारि
सहेली। मान्यो मनायो न मैं मतिराम गुमान में ऐसी भई
अलबेली। आजु तो ल्याउ मनाइ कन्हाई को मेरो न लीजिये
नाम सहेली।२३७। दोहा। जो तू कहै तो राधिका पियहि म
नावन जाउं। उहां कहों गी जाय के सखी तिहारो नाउं।२३८।
अथ प्रौढ़ा कलहान्तरिता को उदाहरण। कवित्त। ठाढ़े भये क
र जोरि के आगे अधीन ह्वै पायन सीस नवायो। केती करी।
बिनती मतिराम पैं मैंन कियो हठते मन भायो। देखत ही
सगरी सजनी तुम मेरे तो मान महामद छायो। रूठि गयो उ
ठि प्राण पियारो कहा कहिये तुमहूं न मनायो।२३९। दोहा।
प्रीतम जब पायन पस्यो तब अति भई सरोष। कह्यो न मान
हुं आपही हमै दीजियतु दोष।२४०। अथ परकीया कलह-
न्तरिता को उदाहरण। कवित्त। जाके लिये गृह काज तज्यो न।
सिरवी सरिवयान की सीरव सिरवाई। बैर कियो सिगरे ब्रज

गांव मों जाके लिये कुल कानि गवाँई। जाके लिये घर बाहिर हूं मतिराम रह्यो हंसि लोग चवाई। ताहरि सों हित एकहि बार गँवारि मैं तोरत बार न लाई। १५२। दोहा। जोरत हू सजनी। विपति तोरत नयन समाज। नेह कियो बिन काज हीं नेहि कियो बिन काज। १५३। अथ गणिका कलहान्तरिता को उदाहरण। कवित्त। जातें लही जग बीच बड़ाई जो मेरो वियोग जो होत है छीनो। मोहिं गने मति राम जो प्राण के मेरे मनाहि रह्यो जो अधीनो। मेरे लिये निनही उठि के गहनो जु गढ़ाय के ल्यावे नवीनो। प्राण पियारे सो पायन लाग्यो रीमें हंसि कंठ लगाय न लीनो। १५४। दोहा। यासों कियो सनेह मन रहे न एको। साध। तासों भई सरोष हौं सजनी बिन अपराध। १५४। अथ विप्रलब्धा को लक्षण। दोहा। आप जाय संकेत में मिले न जाको पीय। ताहि विप्रलब्धा कहत सोच करत अति जीय। १५५। अथ मुग्धा विप्रलब्धा को उदाहरण। कवित्त। आलिनि के सुख मानिवे को पिय प्यारे की प्रीति गई चलि बागे। छाय रह्यो हिय रो दुख सों जब देख्यो नहूं नदलाल सभागै। काहू सों बोल कछू न कहैं मति राम न चित्त कहूं अनुरागै। खेल सहेलिनि में पर खेल नवेली को खेलन जेल सो लागै। १५६। दोहा। लख्यो न कन्त सहेट में लख्यो नयन कोराय। नवल बाल को कमल सों गयो बदन कुंभिलाय। १५७। अथ मध्या विप्रलब्धा को उदाहरण। कवित्त। केलि के मन्दिर देख्यो न लाल को बाल के दाहन अंग दहे हैं। मोह बढ़ाय सखी मो लख्यो मति राम कछून कुबोल कहे हैं। भूलि हुलास बिलास गए दुखतें भरि के अंसुवा उमहे हैं। ईछन छोर-

नितें न गिरे मनो तीछन कोरनि छेदि रहे हैं।१४८।दोहा॥ तिय कों मिल्यौं न प्राण पति सजल जलद तन मैन। सजल जलद लखि के भये सजल जलद से नैन।१४९। अथ प्रोढ़ा लब्धा को उदाहरण। कवित्त। सकल सिंगार साजि संग लै सहेलिन कों सुन्दरि मिलन चली आनंद के कंद कौ। कवि मतिराम बाल करनि मनोरथनि परख्यो परियं क मैन प्यारे नन्द नन्द कौ। नेह नें लगी है देह दारुन गहन गेह बान के बिलोक द्रुम बेलिन के वृन्द कौ। नन्द कौ हँसत आयो मुख चन्द्र अब चन्द लाग्यो हंस हंसनि तिया के मुख चन्द को।१५०। दोहा। लख्यो न मन्दिर के लिके पिय रुचि विजिन अनंग। नैन करन नें जल बलय गिरे एकही संग।१५१। अथ परकीया विप्र लब्धा को उदाहरण। कवित्त। चलो मति राम प्राण प्यारे को मिलन। घान ने सुक निहारि कें बिगारि काज घर को। पियरे वस्न दुख हियरे समाइ रहेो कुंजन में भयो न मिलाप गिरधर को। बिसरे बिलास सब बिलाइ गयो हांस छायो सुंदरि के तन में प्रताप पञ्च सर को। तीछन जुन्हाई अरु। ग्रीषम की घाम भई भीषन पियूष भानु भानु दुख हरि को।१५२। दोहा। नची जोन्हि सों भूमि अति भरें कुञ्ज के फूल। तुम विन वाको वन भयो खड्ग पत्र के तूल।१५३। दोहा। साहस करि कुंजन गई लख्यो। न नन्द किशोर। दीप सिखासी थर हरी लगे बयार झकोर।१५४। अथ गणिका विप्र लब्धा को उदाहरण॥ कवित्त। वीर बिलासनि कोटि हुलास बढ़ाइ के अङ्ग

आइ परियंक में निसंक जाइ अंक भरि आनन्द अधर रस चाखियो। नेवरी की ननक रुनक राखि प्यारी आजु रसन की ननक रुनक रस राखियो।१६९। दोहा। दीठि बचाई सखिन की कौल भौन में जाइ। पौढ़ि रह्यो छिन सेज तिय। अति आनन्द अधिकाइ।१७०। अथ मध्या वासक सज्या को उदाहरण। कवित्त। केसरि कनक जहां चम्पक बरण कहा दामिनी यों दूरि जात देह की दमक तें। कवि मनि राम लोने लोचन लपट लाज अरुन कपोल काम तेज की तमक तें। पग के धरत लाल किंकिनि नेवर बजैं बिछिया रुनक उठैं एकही झमक तें। नाह सुख चाहि चित्त औचक हंसनि चौंकि परे चंद सुरली निज चौका की चमक तें।१७१। दोहा। निशि नियरानि निहारियत सौति वदन श्रम बिन्दु। सखी एक यह देखिये नेरे आनन इन्दु।१७२। अथ प्रौढ़ा वासक सज्या को उदाहरण। कवित्त। बारन धूप अंगारन धूप के धूप अंध्यारी पसारी महा है। आनन चन्द समान उग्यो मृदु मन्द हंसी जनु जोह छुटा है। फैल रही मतिराम जहां तहं दीपति दीपन की परभा है। लाल निहार मिलाप को बाल सु आजु करी दिन ही में निशा है।१७३। दोहा। सब सिंगार सुंदरि सजे बैठी सेज बिछाय। भयो द्रौपदी को बसन बासर नहीं बिलाय।१७४। अथ परकीया वासक सज्या को उदाहरण। कवित्त। सांझहिं तें करि राखै सबै करि वे को जु काज हुते रजनी के। पौढ़ि रही उमगी अनिही मतिराम अनन्द अमात नहीं के। सोवन जानि के लोग सबै अधिकाने मिलाप मनोरथ पी के। सेज तें बाल उठी हरखें पट खोलि दिये तबही खिरकी के।

।१७५। दोहा। मन मोहन के मिलन की करै मनोरथ नारि। धरै पौन के साम्हने दिया भवन को वारि।१७६। अथ गणिका वासक सज्या को उदाहरण। कवित्त। सन सारी। सोहत उज्यारी मुख चन्द की सी महलनि मन्द मुसक्यान की मह्य मही। अंगिया के ऊपर है उलही उरोज ओप डर मतिराम माल मालती की डहा डही। मांजे मंजु मुकुर से मंजुल कपोल गोलगोरी की गुराई गोरे गात न गहा गही। फूलन की सेज बैठी दीपक फैलाय लाय बेली की फुलेल फूली फूल सी लहा लही।१७७। दोहा। सुन्दरि सेज संवारि के साजे सबै सिंगार। दृग कमलन के द्वार में बांधे बन्दन वार।१७८। अथ स्वाधीन पतिका को उदाहरण। दोहा। सदा रूप गुण रीझि पिय जाके रहैं अधीन। स्वाधिन पति का नायका बरणे कवि परवीन।१७९। अथ मुग्धा स्वाधीन पति का को उदाहरण। कवित्त। आपने हाथ सों देत महावर आपहि वार सिंगारत नीके। आपन ही पहिरावत आनि कै हार संवार के मोल सरी के। हौं सखि लाजन जात मरी मति राम सुभाय कहा कहौं पीके। लोग मिले घर घर करें अबहीं ते ये चेरे भये दुलही के।१८०। दोहा। अंग अपबलो कि केतिय योवन की ज्योति। सुधा सिंधु अवगाह सुन दीठ। नाह की होति।१८१। अथ मध्या स्वाधीन पतिका को उदाहरण। कवित्त। जग मग जोवन अनूप नेरो चाहिये। रति ऐसी रंभासी रंभासी बिसाइये। देखि वे करे मान प्यारे मान प्यारी पास खरो घूंघट उघारि नेकु बदन दिखाइये। नेरे अंग अंग में मिठाई लेउ नाहीं भरि मतिराम कहै।

सिंगार बनायो प्रीतम गेह गई चलिके मतिराम तहां न मिल्यो मन भायो। संग सहेली सों रोस कियो नहिं आपन कौं यह दोष लगायो। हाय कियो मैं मतो यह कौन जो आपन भौन नवोढ़ि पठायो। २५५। मोंहि पठायो कुञ्ज में उत आयो नहिं आप। आली औरहु प्रीति को मेरो मिट्यो मिलाप। २५६। अथ उत्का को लक्षण। दोहा। आपु जाय संकेत में पीउ न आयो होइ। ताकों मन चिन्ता करे उत्का कहिये सोइ। २५७। अथ मुग्धा उत्का का उदाहरण। कवित्त। बीति गई युग याम निशा मतिराम मिटी तम की सरसाई। जानति हों कहुं और तिया सों रह्यो रस में रमि के रस काई। सोचति सेज परी यों नवेली सहेली सों जानि न बात सुनाई। चन्द चढ़्यो उदया चल में मुख चन्द में आनि चढ़ी पियराई। २५८। दोहा। कितन कन्त आयो अली लाज न बूझि सकै न। नवल बाल पलका परी पलकन लागे नैन। २५९। अथ मध्या उत्का को उदाहरण। कवित्त। बारहिं बार बिलोकति द्वारहिं चौंकि परै तिन के खर केहूं। सेज परी मतिराम बिसूरति आइ अहैं अबहीं लखि मैं हूं। संग सखीन के खेलत ही अजहूं रजनी पति के अघ रहूं। लालन बेगिन जाहु घरे फिर बालन मानिहैं पाइ परे हूं। २६०। दोहा। कहां रह्यो आयो सखी पीउ पहर युग मैन। अधनिकर अधरानि सों बाल बदन तें बैन। २६१। अथ उत्का प्रौढ़ा को उदाहरण। कवित्त। केयु घरी निशा बीति गई अरु मेह चहूं दिश आयो उनै है। अंग सिंगार के बैठी है सांवरे तेरी ए बाट बिलोकति है है। बैठे कहा मति राम।

रसाल हो राति मनावनि ही पुनि जैहै। जाइन वेगि निहारी। पियारी सों दोष विचारि हमैं वहु दैहै। १६३। दोहा। पीउ न आयो ध्यान में मूंदे लोचन वाल। पलक उघारि पलक में आयो होय न लाल। १६३। अथ परकीया उत्का को उदाहरण। कवित्त। यमुना के तीर वह शीतल समीर जहाँ मधुकर मधुरानि करत मन्द शोर हैं। कवि मतिराम तहाँ छबि सों छबीली बैठी अंगनि तें फैलति सुगन्ध की झकोर हैं। प्रीतम बिहारी के निहारि वे को बार ऐसी चहूँ ओर दीरघ दृगनि करी दौर हैं। एक ओर मीन मानो एक ओर कंज पुंज एक ओर खंजन चकोर एक ओर हैं। १६४। दोहा। कंत वारलखि गेह की कुंज देहरी आय। ऐ हैं पीव विचारियो नागरि फिर फिर जाय। १६५। अथ गणिका उत्का को उदाहरण। कवित्त। प्रीतम को धर ध्यान घरीक करे मनहीं मन काम कलोलें। प्रीतम के रस के मतिराम अचानक हीं अँखिया पुनि खोलैं। प्रीतम ऐ हैं अजौं सजनी अंगिराई जम्हाइ घरी कुँ यों बोलें। गावैं घरीकु गरही हरे हरि गेह के बाग हरे हरे डोलें। १६६। दोहा। बार बधू पिय पंथ लखि अंगिरानी अंग मोरि। पौढ़ि रही परयंक मनु डारी मदन मरोरि। १६७। अथ वासक सज्या का लक्षण। दोहा। ऐ हैं प्रीतम आजु यों निश्चय जान्यो वाम। साजे सेज सिंगार सखि वासक सज्या नाम। १६८। अथ मुग्धा वासक सज्या को उदाहरण। कवित्त। भई हौं सयानी तरुनाई सरसानी प्रीति में पत्यानी उठ लाज डर ना कियो। कवि मति राम काम केलि की कलानि करि। मोहन लला को वस कीजियो अभिलाषियो। मृदु मुस-

ये प्रगट हीं न पाइये। नायक के नैनन में नाइये सोवार में सब सोतिन के लोचननि लौनु सो लगाइये। १८२। दोहा। चढ़े आपने हगन कों यस कहि सको सु मैन। पिय नैननि भीतर सदा बसत तिहारे नैन। १८३। अथ मोढ़ा स्वाधीन पतिका को उदाहरण। कवित्त। लालन में रति नायक ने सुख सुन्दरता रुचि पुंजनि पेखी। बालन तौ मतिराम कहैं रति नें अति रूप कला अवरेखी। मासुह बैठ लखैं इक सेज में बोली अली एक रूप विसेखी। भाल में तेरे लिखो विधि सों यह लाल की मूरति लाल में देखी। १८४। दोहा। सुधा मधुर तेरे अधर सुन्दर सुमन सुगंध। पीव जीव को बंधु है बंधुजीव को बंध। १८५। अथ परकीया स्वाधीन पतिका को उदाहरण। कवित्त। मो जुग नैन चकोरनि को यह सबरे रूप सुधा ही को नैबो। कीजे कहा कुलकान ते आनि परयौ अब आपनो बेस छिपैबो। कुंजन में मतिराम कहूं निसि द्यौसहूं घात परे मिलि जैबो। लाल सयानी अलीनि के बीच निवारिये ह्यां की गलीनि को ऐबो। १८६। दोहा। बियम लोग ब्रज गांव को लाल बिलोको बास। बढ़ि जैहै इन हगन के हांसनि तें उपहास। १८७। अथ गणिका स्वाधीन पतिका को उदाहरण। कवित्त। भूषण सँवर ल्यावत आपु रहै पहरावन को सुख हेरे। आपहीं पान खवावनि आनि सहेलीन आवन पावत नेरे। ता पिय सों रिस कैसे करो मतिराम कहै सिखये सखि तेरे। पूर रहै मन भावन के गुण मान को ठौर नहीं मन मेरे। १८८। दोहा। मोहि लखे सजनी सदा जाको धन मम प्राण। सपनेहूं तो पीव सों मान न भलो सयान। १८९। अथ अभिसारिका को लक्षण। दोहा।

पियहि बुलावे आप को पिय पै आपहि जाय । ताहि कहत अ-
भि सारिका जे प्रवीन कविराय ।९०। अथ मुग्धा अभि सारि-
का को उदाहरण । कवित्त । बात न जाय लगाय लई रस ही रस
में मन हाथ कै लीनो । लाल निहारे बुलावन को मतिराम मैं
बाल कह्यो परवीनो । वेगि चलो न विलम्ब करो लख्यो बाल
नवेली को नेह नवीनो । लाज भरी अँखियां बिहसी बसि बो-
ल कहे बिन उत्तर दीनो । ९१। दोहा । अली चली नवलाहि
लै पिय पै साज सिंगार । ज्यों मतंग अंडदार को लिये जात ।
गंडदार । ९२। अथ मध्या अभि सारिका को उदाहरण ।
। कवित्त । बैठि रहे मतिराम लला घर भीतर सांझहि ते अनु-
रागी । बानक सों बनि चारु सिंगारनि आई सुहागनि प्रेम ।
सों पागी । प्यारे कह्यो हंसि आइये सेजहिं प्यारी की जाति
विलासिनि जागी । नैन नवाइ रही मुसक्याय कै हार हिये ।
को संवारन लागी । ९३। दोहा । जोबन मद गज मन्द ।
गति चली बाल पिय गेह । पगनि लाज आई परी चह्यो म-
हा मद नेह । ९४। अथ प्रौढ़ा अभिसारिका को उदाह-
रण । कवित्त । सहज सुवास युत देह की दुगुनि दुति दामि-
नी दमक दीप केसर कनक तें । मतिराम सुकवि सुमुख
सुकुमार अंग सोहत सिंगार चारु जोबन बनक तें । सेइवे को
सेज चली मान पति प्यारे पास जगत जुदार जोति हंसनि कन
क तें । चढ़त अटारी गुरु लोगन की लाज प्यारी रसना इसन
दबे रसकन कन तें । ९५। दोहा । सजि सिंगार सेजहि चली ।
बाल जहां पति मान । चढ़त अटारी की सिढ़ी भई कोस परिनाम
। ९६। अथ परकीया कृस्ना अभिसारिका को उदाहरण । कवित्त

उमड़ घुमड़ दिग मंडलनि मंडि रहे झूमि झूमि बादर कुहकि निस कारी में । अंगन में कीन्हों मृग मद अंग राग तैसो । आनन उढ़ाय लीन्हों स्याम रंग सारी में । मतिराम सुकवि अ- यं के रुचि राज रही आभरन राजी मरकत मनवारी में । मोहन छबीले को मिलन चली ऐसी छवि छाहलो छबीलो छवि । छाजत अंध्यारी में । १९७ । दोहा । स्याम बसन में स्याम । निशि दुरगति याकी देह । पहुंचाई चहुं ओर घिर भौर भीर पि- य गेह । १९८ । अथ शुक्ला अभिसारिका को उदाहरण । कवि- त्त । अंगनि में चंदन चढ़ाय घन सार सेत सारी छीर फेन ऐ- सी आभा उफनात है । राजत रुचिर रुचि मोतिन के आभर- न कुसुम कलित केश शोभा सरसाति है । कवि मतिराम । प्राण प्यारे को मिलन चली करके मनोरथनि मृदु मुसकानि है । होति न लखाई निशि चन्द की उज्यारी मुख चंद की उज्यारी तन छांहों छिपि जाति है । १९९ । दोहा । मलिन क- री छबि जोन्ह की तन छबि सों बलजाऊं । कैसे जैहो पियपैस- खी लखि जैहे सब गाउं । २०० । अथ दिवा अभिसारिका को उदाहरण । कवित्त । सारी जरतारी की झलक झलकनि तैसो केसरि को अंग राग कीन्हों सब तन में । तीखण तरनि की । किरनि ते दुगुन ज्योति सोहै जवाहर जड़ित आभरन में । कवि मतिराम आभा अंगनि अंगारिन की घूम कैसी धार छबि छाजति कंचन में । ग्रीषम दुपहरी में हरि को मिलन चली जानी जात नारि नन्द बारि सुत बन में । २०१ । दोहा । ग्री- षम ऋतु की दुपहरी चली बाल बन कुंज । अंग लपटि ती- क्षण लुबै मलय पवन के पुंज । २०२ । अथ गणिका अभि-

सारिका को उदाहरण । कवित्त । साँझहि सिंगार साजि प्राण प्यारे पास जाति बनिता बनक बनी बेलसी अनन्द की । कवि मति राम कल किंकिनि की धुनि बाजे मन्द मन्द चाल ज्यों । बिराजत गयन्द की । केसर में रंगिये दुकूल हाँसी में कल केसनि में छाई छवि फूलनि के वृन्द की । पीछे पीछे आ वनि अँधियारी सी भंवर भीर आगे फैल रही उजियारी मु ख चन्द की ।२०३। दोहा । नागरि सकल सिंगार करि चली प्रा ण पति पास । प्रिया अली बिहसत सनो सोभा सहज बि लास ।२०४। अथ प्रवत्स्यत प्रेयसी को लक्षण । दोहा । होन हार पिय के बिकल बिरह होय जो बाल । ताहि प्रवत्स्य त प्रेयसी बरनत बुद्धि विशाल ।२०५। अथ मुग्धा प्रव- त्स्यत प्रेयसी को उदाहरण । कवित्त । जादिन तें चलिबे की चरचा चलाई तुम तादिन ते वाके पियराईतब छाई है । कहै मतिराम छोड़े भूषण बसन पान सखिन सों खेलन हंसबि बिसराई है । आई ऋतु सुरव की सुहाई प्रीति वाके चित्त ऐ- से में चलो तो लाल रावरी बड़ाई है । सोवत न रैन दिन रोव त रहत बाल बूझति कहति सुधि मायके की आई है ।२०६। क्यों सहिहे सुकुमार यह पहलो बिरह गोपाल जब वाके चि त हित भयो चलन लगे तब लाल ।२०७। अथ मध्या प्र- वत्स्यत प्रेयसी को उदाहरण । कवित्त । गौने के द्योस छ- सातक बीते न चौथी कहां अबही इन आई । लालन बालके ना छिन नें मतिराम परी सुरव में पियराई । तून बहूको पठा- य सखी यह देखि दुहून की प्रीति सुहाई । रोये से रोचन मोये से लोचन सोपन सोचत रैन बिताई ।२०८। दोहा ॥

दोहा। अबही लै मिलि मोहि सखि चलत आजु ब्रजराज। अँसुवनि राखति रोकि कै जियहि निकासति लाज।२०९। अथ मोढ़ा प्रवत्स्यति प्रेयसी को उदाहरण। कबित्त। मलय समीर लागे चलन सुगंन्ध सीर पथिकन कीन्हे पद देशनि ते आपने। मतिराम सुकबि समूह न कुसुम फूले कोकिल मधुप लागे बोलन सुहावने। आयो है बसन्त भये पल्लवित जल जान तुम लागे चलिबे की चरचा चलावने। राबरी तिया को तरु वर सरबन के किसले कमन्न हैं हैं बारक बिछावने।२१०। दोहा। कोपनि ते किसल्ले जवै होहिं कलिन ते कौल। तव चलाइये चलन की चरचा नायक तौल।२११। अथ परकीया प्रवत्स्यति प्रेयसी को उदाहरण। कबित्त। मोहन लला को सुन्यो चलन बिदेश भयो बाल मोहनी को चित्त निपट उचाट में। रवरी तल बेली तन मन में छबीली रोरै छति पर छिनकु छिनकु पाँव बाट में। प्रीतम नयन कुवलयन को चंद भयो घरी में चलेगा मतिराम जेहि घाट में। नागरी नवेलि रूप आगरी अकेली रीति। गागरी लै ठाढ़ी भई घाट ही के बाट में।२१२। दोहा। चलत सुन्यो परदेश को हियरा रह्यो न ठौर। लै मलिनी मीतहिं दयो नवर सालका मौर।२१३। अथ गणिका प्रवत्स्यति प्रेयसी को उदाहरण। कवित्त। मंजन कियो न तन अंजन दियो नैनन जावक दियो न पाय रही मन मारि कै। मतिराम सुकवि तमोल छोड़ि बैठी बीर पहिरे वसन डारे भूषण उतारि के। ऐहैं आजु पीव बिदा मांगन बिदेश को यों नेह के जमाय वे की चातुरी बिचारि कै। गारि राख्यो चन्दन बगारि राख्यो घन सार आंगन में सेज सरसिजन संवारि कै।२१४। दोहा। चलत पीय परदेश को

वरज सकों नहिं ताहिं । लै रैहों आभरन ज्यों जियत पाइहौ मो- हिं। २२५। अथ आगत पतिका को लक्षण। दोहा। यातिय को परदेश ते आयो पिय मतिराम। ताहि कहत कविलोग यह आगत पतिका वाम। २२६। अथ मुग्धा आगत पतिका को उदाहरण। कवित्त। आयो विदेश तें प्राण प्रिया मतिराम। अनन्द बढ़ाइ अलेखै। लोगनि सों मिलि आंगन वैठि घरीही घरी सिगरो घर पेखै। भीतर भौन के द्वार खड़ी सुकुमार तिया तन कम्प विशेखै। घूंघर को पर ओर किये पर ओर दियेपिय को मुख देखै। २२७। दोहा। पिय आयो नव बाल तन बाढ़यो हरष बिलास। प्रथम वारि बूंदन उठै ज्यों वसुमती सुबास। २२८। अथ मध्या आगत पतिका को उदाहरण। कवित्त। चंद मुखी सजनानि के संग हुती पति अंगनि में मनु फेरत। ताहि समै पिय प्यारे की आगम प्यारी सखी कह्यो द्वार तें टेरत। आय गये मतिराम जबै नव देखत नैन अनन्द भये रत। भौन के भीतर भाजि गई हंसि के हरुवे हरि को फिर हेरत। २२९। दोहा। पिय आगम सरदा गमन बिमल बाल मुख इन्दु। भो अंग विमल पिय पै भयो फूले दृग अरबिंद। २३०। अथ प्रौढ़ा आगत पतिका को उदाहरण। कवित्त। प्राण न प्यारे मिल्यो सपने में परी जबते सुख नींद बिहोरे। कन्त को आयबो त्योहीं जगाय सखी कह्यो देन पीउ पै निचोरे। यो मतिराम भयो हियते सुख बाल के बालम सों दृग जोरे। जैसे मिहीं पट में चरकील चढ़े रंग तीसरी बार के बोरे। २३१। दोहा। पिय आयो परदेश ते हिय हुलसी अति बाम। टूक टूक कंचुक कियो कर कमनीने काम। २३२। अथ परकीया आगत पतिका

को उदाहरण। कवित्त। आयो बिलब बिदेश ते बालम बाल बियो-
ग व्यथा बिसराई। आई तहां तिनके संगहै सब गांव कीजे सुन्दरी
जुरि आई देखतही मतिराम कहैं अंखियानि में आनंद की छ-
बि छाई। लाजनि कौं करिबेन कहैं सुकह्यो दुख देह सबै दुखराई।
।२२३। अथ दूसरो उदाहरण। कवित्त। भावते को सुनि आगम।
आनन्द अंगनि २ में उमह्यो है। सो हमहूं हित सों न दुराइये।
आली कहौ यह कौन कह्यो है। गाढ़ी भई माहरि ररकी अं-
गिया की तनी नित तन उमग्यो है। खैंच लिये सुख के असुवा
यह कौं दुरि है हियरा उमह्यो है। २२४। दोहा। सुन्यो मायते
जब वही बा मन आयो कन्त। कुशल बूझिबे के मिसिहि ली-
न्हो बोलि इकन्त। २२५। अथ गणिका आगत पतिका को।
उदाहरण। कवित्त। नागर बिदेश में बिताई बहु द्योस आय।
नागरि के हिय में हुलसि निकसी खान की। कवि मतिराम।
अंक भरिके मयंक मुखी नेहे सरसाइ भाही मनि सुख दान
की। सुबरन बोलि के बतावत है सुबरनही रजत लावत हैं
छबि मुसक्यानि की। आंखिन तें आनन्द के आंसू उमगाइ
प्यारी प्यारे को दिखावत सुरत सुकतान की। २२६। दोहा।
फूली नागरि कामनी उड़ि गये निन्न मलिंद। आयो मित्त दि-
देश तें भयो मुदित आनन्द। २२७। अथ उत्तमा लक्षण। दोहा।
पिय हितु को अनहित करे आप करे हितकारि। ताहि उत्तमा ना-
यका कविजन करत बिचारि। २२८। अथ उदाहरण। कवित्त।
राति कहूं रस के मनभावन आवन प्रात प्रिया घर कीनो। देख-
तही मुसक्याय उठी आगेहै आदर को फिर लीनो। मोहन
के तन में मतिराम दुकूल सुनी लीनों हार नवीनो। केसर के

के रंग सों रंगिके पटु पीत के मीनम के कर दीनो। २२९। दोहा।
पिय अपराध अनेक निज आँखिन हूं लखि पाइ। तिय इकहूं
कहूं कन्त सों माने करत लजाय। २३०। अथ मध्यमा लक्षण।
दोहा। पियसों हित तें हित करै अनहित कीनों मान। ताहि
मध्यमा कहत है कवि मति सुजान। २३१। अथ उदाहरण। क-
वित्त। आयो प्राण पति रात अन्ते बिताई ऐंठी भौंहनि चढ़ाई
रंगी सुन्दरि सुहाग की। आनन बनाई पस्यो प्यारी के पगनि आइ
छल सों छिपाइ छैल छबि रत दाग की। छूटि गयो मान लगी आ-
पहि सवांरन को खिरकी सु कवि मतिराम पिय पाग की। रिस हा
के आंसू भरे आनन्द के आंखिन में रोस की ललाई सों लला
ई अनुराग की। २३२। दोहा। मेरे तन के रोम यह मेरोहि नहीं।
निदान। उहि आदर आगमन को करो कौन विधि बाम। २३४।
अथ अधमा को लक्षण। दोहा। पिय सों हित हूं कों किये।
कर माने यों बाल। तासों अधमा कहत हैं कवि मति राम रसाल
। २३५। उदाहरण। कवित्त। आये हे सयान पन गयो है अज्ञानम-
न निन उठि मान करिबे टेव वावरी। घर घर मानिनी है मानका
मनायो तबै तेरी ऐसी रीति अनकाहू पै नाकरी। कवि मतिरा-
म काम रूप घन श्यामलाल तेरी नेन कोर और चाहे इक टक-
री। हाहा कहे निहोरे हू न हेरनि हरिन नैनी काहू कों करति हठु
हरिल कों लकरी। २३५। दोहा। कहालियो गुरु मान को अति
नाहीं है नेम। पारद सों उड़ि जायगी। अलि अंचल यह प्रेम।
२३६। इति नायका लक्षण समाप्तम्। अथ नायक लक्षण।
दोहा। तरुण सुघर सुन्दर सकल काम कलानि प्रवीन। नाय-
क सों मतिराम कहि कवित रीत रस लीन। २३७। अथ उदाहरण।

।कवित्त। गुच्छन के अवतंस बेस सिखि पक्षन अच्छ किरीट बनायो। पल्लव लाल समेत छरी कर पल्लव से मतिराम सुहायो। गुंजनि के उर मंजुल हार निकुंजन तें कढ़ि बाहर आयो। आजु को रूप लखै ब्रजराज को आजुही आँखिन को फल पायो।२४८। दोहा। पगी भांवरे सांवरे रास रसिक रसजान। उनहीं में मन भ्रमत है है बोडर को पान।२४९। अथ नायक भेद। दोहा। पति उपपति वासिक त्रिविधि नायक भेद बखान। विधि सों ब्याहो पति कहत कवि कोविद मन जान।२५०। अथ उदाहरण कवित्त। पांव धरै दुलही जेहि ठौर रहे मतिराम तहां दृग दीने। छोरयो सखान के साथ को खेलबो बैठ रहे घरही रस भीने। सौंरुही तें ललकै मनहीं मन लालन यों रस सों बस लीने। लोनी सलोनी के अंगनि नाह सु गौने की चूनरी रौने से कीने।२५१। दोहा। जा दिन तें गौनो भयो आई बाल रसाल। ता दिन तें विरहनि भई हरि उड तें बन माल।२५२। अथ नायक का वर्णन। दोहा। नारि भांति सों सब नये प्रथम कहत अनकूल। दक्षिण गनि पुनि धृष्ट सठ रस सिंगार के मूल।२५३। अथ अनुकूल नायक लक्षण। दोहा। सदा आपनी नार सों जोक अतिहि प्रीन। परनारी तें विमुख जो सो अनुकूल सुरीत।२५४। अथ उदाहरण। कवित्त। क्यों हूं नहीं बिसरें निसि वासर मन्द हँसी मुख चन्द उज्यारी। त्यों ही दियो अति नेह सों देह की दीप कला सम दीपति न्यारी। तेरिये ज्योति जगे हिय भीतर आवन नारिन ओर अँध्यारी। नैनन हूं अरु बैन हूं के तन हूं मन हूं के तुहीं अति प्यारी।२५५। दोहा। सपनेहूं मन भावनो करत नहीं अपराध। मेरे मनही में रही सखी मान की साध।२५६। अथ दक्षिण लक्षण। दोहा।

एक भांति सब तियनि सों जाको होय सनेह । सो दछिण मतिराम कह वरणत है मति गेह । २४७ । अथ उदाहरण । कवित्त । सांझ- मे ललना मिलि आई खडी जहं नन्दलला अलबेलो । आपनि पोरि बताइ कह्यौ अब आजु हमारिही पोरि में खेलौ । खेलन । को निश चांदनी मोहन नैन सतो मतिराम सुहेलो । त्यौं हंसि के ब्रज राज कह्यो ये आजु हमारि ही पोरिमें खेलो । २४८ । दोहा । दक्षिण नायक एक तुम मनमोहन ब्रज चन्द । फूलये ब्रज । वनितानि के हग इन्दी वर वृन्द । २४९ । अथ धृष्ट लक्षण । । दोहा । करे दोष निरशंक है डरे न पिय के मान । लाज धरे । मन में नहीं नायक धृष्ट निदान । २५० । अथ उदाहरण । कवित्त । वरजो न मानत हो बार बार बरजे में कौन काम मेरे इत । भौन में न आइये । लाज को न लेस जग हांसी को न डर म- न हंसत २ आन बात न बनाइये । कवि मतिराम नित उठि कैं कलंक करो नित २ सौंहैं करो अंगविसराइये । ताके पग लागो निशि जागि जाके उर लागे मेरे पग लागि २ आगि न लगाइये । २५१ । दोहा । आ- जु नैन कुलटनि के आनि वसे ब्रजराज । हिये तिहारे ने सकल मानि निकारी लाज । २५२ । अथ सठ का लक्षण । दोहा । डरे करै अपराध ही करे कपटकी प्रीति । वचन क्रिया में आनि चतुर सठ नायक की रीति । २५३ । अथ उदाहरण । कवित्त । मोते तो कछू न अपराध प- र्‌यो प्राण प्यारी मान करि रही योहीं काहि के अरस तें । लोचन चकोर मेरे सीतलही होत तेरे अरुण कपोल सु- ख चन्द के दरश तें । कहैं मति राम उठ लागि उर मेरे कि- न करति कठोर मन असुवा वरस नें । कोपते कटूक बो- ल बोलति है तऊ मोको मीठे होत अधर सुधारस परस-

ते। २५४। दो०। पियत रहैं अधरान को रस अति अधिक अमोल। तातें मीठे कहत हैं बाल बदन ते बोल। २५५। अथ उपपति। दोहा। जो पर नारी के रसिक उपपति ताहि बखान। प्रीतम जो गणिकानि को बैसिक ताहि सुजान। २५६। अथ उपपति को उदाहरण। कवित्त। सुन्दर सरस सब अंगनि सिंगार सजि सहज सुभाव निज नेह कछु कै गई। कीन्हें मति राम विहंसो हैं से कपोल गोल बोलिन अमोल बोल इतनाहीं दुख दै गई। मेरी ललचौंहे मुख फिर के लजोहै हे ललचौंहे चारु चखनि। चितै कैसी चली गई। निपट निकट है के कपट सों छुवाइ अंग लाय कैसी लपट लपेट मन लैगई। २५७। दोहा। नैन जोरि मुख मोरि हंसि ने सुक नेह जनाय। आग लेन आई हिये मेरे गई लगाय। २५८। अथ बैसिक को उदाहरण।। कवित्त। आगमन चाहिनिक चौर रहयो तब जोति जगर मगर। आभरन के नगन सो। जोवन के मद रूप मदवा के मैन मद छवि मतवारे हें के थकित पगन सो। कहै मति राम लोल लोचन बिसाल वाके तीक्षण कटाक्षण कोभेद के लगन सो। बार बार घूमि बार बधू बार भौरनि में मांगन की सुक्र। माल गान में मगन सो। २५९। दोहा। लोचन पानिग पढ़ि। सजी लट बंसी परबीन। सो मन बार बिलासनी फांसि लियो मनु मीन। २६०। अन्य नायक भेद। दोहा। मानि वचन चातुर कह्यो क्रिया चतुर पुनि जान। तीन भांति ऐसे कहत नायक सुकवि बखान। २६१। अथ मानी लक्षण। दोहा। करत नायका सों कहूं जो नायक अभिमान। तासों मानी कहत हैं कवि मतिराम सुजान। २६२। अथ उदाहरण। कवित्त

बहु सुधि करो क्यों न नैन जलनीके दल सेज सारे सीरे सरसिजनि बिछाइये। अमल उसीर इन्दु चंदनगुलावनीलों कहां लगि और उपचारनि जनाइये । छल बल छल वाको में मिलाइ के जिवाय तव कवि मति राम अंब साहिबी जनाइये । ऐसो मन भावन गुमान है जु प्यारी केशनाइबेमनाइबेको तुमको मनाइये ।३६३। दोहा। यामें कौन सयान है मोहन लाल सुजान। आय करत अपराध ही आपहि करत गुमान।३६४। अथ बचन चतुरता का लक्षण। दोहा। बचननि में जो करत है चतुराई मति राम।बचन चतुर नायक सरस लीजे जानि सकाम।३६५। अथ उदाहरण कवित्त। दूसरे को बात सुनि परति न ऐसी जहां कोकिल कपोतन को धुनि सर साति है। छाई रहे जहां द्रुम बेलिन सों मिलि मतिराम अली कुलनि में अंध्यारी अधिकाति है। नखत से फूलि रहे फूलन की कुंज घन कुंजन में होत जहां दिनहू में राति है। ता बन की बाट कोऊ संग ना सहेली कहि कैसे तू अकेली दधि बेचनि को जाति है।३६६। दोहा। तोको देउं बताइ के तू ।कित होति उचाट। ग्वालिन दधि बेचन गई वंशी बट की। बाट।३६७। अथ क्रिया चतुर का लक्षण। दोहा। करे क्रिया सों चातुरी जो नायक रस लीन। क्रिया चतुर ताकों कहत कवि मति राम प्रवीन।३६८। अथ उदाहरण। कवित्त। नन्द। लाल गयो नितही चलिके जित खेलति बाल सखी गन में। तहां आपही मूंदि सलोनी के लोचन चोर मिहीचनि खेलन में। दुरिबे को गई सिगरी सखियां मतिराम कहैं इतने छन में। मुसकाइ के राधिका कण्ठ लगाय छिप्यो कहुं जायनि

कुंजन में ।२६९। दोहा । साँझ समय वह छैल की छलनि कही नहिं जाय । बिन डर बल डर वाइ के लियो मोहिं उरलाय। ।२७०। अथ प्रोषित नायक लक्षण । दोहा । नायक होय विदेश में जो वियोग अकुलाय । तासों प्रोषित कहत हैं जे प्रवीन कवि राय । २७१। अथ उदाहरण । कवित्त । प्यारे पगे बदन पीयूष पान करि करि उमगि उमगि तिय आनन्द विशेषि हैं। कवि मतिराम नन नपति बुझाय जैहै नव निज जनम सुफल करि लेखि हैं। होनल को शीतल करन चारु चांदनी सी मन्द मृदु मुसक्यानि अनमिष पेखि हैं। ह्वै है तो निरास मेरे लोचन चकोरन की जब वाको आनन अमल इन्दु पेखि हैं। २७२। दोहा। प्रफुलित सुमन सुवास में कर वो आनंद केलि । सो नीको जस लागि है उर सोने की बेलि ।२७३। अथ दरशन लक्षण । दोहा । दरशन । आलम्बनहि में कवि मति राम बखानि। श्रवण स्वप्न अरु चित्र पुनि त्यों प्रत्यक्षहिं जानि । २७४। अथ श्रवण दरशन को उदाहरण । कवित्त । आनन पूरण चन्द लसे अरु विन्दु विलास विलोचन पेखे । अंबर पीत लसे चपला छबि अम्बुद मेचक अङ्ग उरेखे । कामहु ते अभिराम महा मतिराम हिये निहचै करि लेखे । ते बरने निज बैननि सों सखि मैं निज। नैननि सों मनों देखे । २७५। दोहा । जैसो तुम बरन्यो सखी रूप कान्ह को आय। तैसोई मेरे चखन रह्यो आय ठहराय ।२७६। अथ स्वप्न दरशन को उदाहरण । कवित्त । आवत मैं। हरि को सपने लखि नेसुक बाट सकोच न छोड़ी। आगे ह्वै ठाढ़े भये मतिराम चले सुचिते चख लालच एड़ी। होठनि को रस लेन को मोहन मेरी गही कर कांपति ढेड़ी। औौर

भटू न भई कछु बात गई इतनेही में नींद निगोड़ी।२७८।दोहा। पिय मिलाप को सुख सखी कह्यो न जात अनूप।सो तुम सों सपनो भयो सपनो सो सुख रूप।२७९। अथ चित्र दरशन का उदाहरण। कवित्त। आलस भरात परसन। जान्यो जात कहीकहीहीन सुनत बात ना कही। सूंघै ना सुवास। सुमननि को समुझि परी टक टकी बड़े २ हगन में ऊलही। कवि मतिराम ताहि नेकु परवाहि नाहिं ऐसी भांति भई वह नेरे नेह सों नहीं।येरे चित्त चोर चालि चन्द मुखी ताहि चित्रहीमें चाह चाहि चित्रहीमें ह्वै रही।२८०। दोहा। चित्रहु में जाके लखे होत अनन्त अनन्द।सपनेहूं कबहूं सखी सो मिलिहैं ब्रज चन्द। ।२८१। अथ प्रत्यक्ष दरशन को उदाहरण। कवित्त। मोहन लाल को मन मोहिनी बिलोकि बालक सी कबि राखत है उमग उमाह को। सखिन की दीठ को बचाय के निहारत है आनन्द उमाह। दीच पावति न थाह को।कवि मतिराम ओर सबहीके देखतही ऐसी भांति देखत छिपावत उछाह को। वेई नैन रूखे से लगति ओर लोगन को वोही नैन लागत सनेह भरे नाहको।२८२।दोहा। नन्द नन्दन के रूप पर रीझि रही रिझवारि। अथ मूंदी। अंखियन दई मूंदी प्रीति उघारि।२८३। अथ उद्दीपन भाव। लक्षण। दोहा। चन्द कमल चंदन अगर ऋतु बन बाग बिहार। उद्दीपन सिंगार के जे उज्जलय सिंगार।२८४। ।अथ उदाहरण। कवित्त। पूरण चन्द उद्योत कियो घन फूलि रही बन जात सुहाई। भौंरन की अवली कलके रबि कुंजनि में मृदु माय वजाई। तानति काम के बानन सों। मतिराम सबै सखियां अकुलाई। गोपिन गोप कछू न गने

अपने २ घर तें उठि धाई। २८५। दोहा। सखी दूतिका जानियो उद्दीपन को भेद। नायक अरु नायिकनि को हरै विरह को खेद। ।२८६। अथ सखी लक्षण। दोहा। जातिय सों नहिं नायिका कछू छिपावै बात। तासों बरणत सह सखी कवि मति सब अवदात। २८७। अथ सखी कर्म्म लक्षण। दोहा। मण्डन औ शिक्षा करन उपालम्भ परिहास। काज सखिन को जानियो औ ये बुद्धि बिलास। २८८। अथ मण्डन यथा उदाहरण। कवित्त। जावक रंग रंगे पद पंकज नाहको चित्त रंग्यो रंगयातें। । अंजन दै कर नैननि में सुखमा बढ़ी पूयाम सरोज प्रभातें। । सोनेके भूषन अङ्ग रच्यो मतिराम सबै वश करिवे की घातें। यौं हि चलै न सुभाव सिंगारहिं में सखि भूल कही सब बातें। ।२८९। दोहा। सखी पिया की देह में सजे सिंगार अनेक। कजरारी अँखियान में भूल्यो काजर एक। २९०। अथ शिक्षा उदाहरण। कवित्त। मलय को पवन मन्द मन्द के गवन। लयो फूलन के वृन्दन में मकरन्द ढारने। कवि मतिराम चित्त। चोर चारों ओर चाहि लाग्यो चैन चंद चारु चांदनी पसारने। आलिन की आली भाखी मन कैसे मंत्र पढ़ि लागी माननीन के मनन मान मारने। सुमन सिंगार सांजे सेज सुख साजि करो लाज करो आज ब्रजराज पर वारने। २९१। दोहा। कित सजनी है अनमनी अँसुआरली निसंक बड़े भाग नन्दलाल सों झूंहु लगत कलंक। २९२। उपालम्भ उदाहरण। कवित्त। पान की कहानी कहा पानी को न पान करै आहि कर उठत अधिक उर। आधिके। कवि मतिराम भई बिकल बिहाल बाल राधिके जिवावे अनंग अपराधिके। याही को कहायो आज सज दिन

चारिही में करी है उजारि ब्रज ऐसी रीति नाधि के। जैसे तूने मोहन बिलोक्यो वाकी ओर तें सबेरहूं सो बैरिन बिलोके बैरु। साधि के।२९३। दोहा। वाको मन लीन्हीं लला बोल्यो बोल रसाल। मुकति तनकही बात में ललित बेलि बर बाल।२९४। परिहास यथा उदाहरण। कवित्त। गौने के द्यौस कहैं मतिराम सहेलिनि को मिल के गन आयो। कंचन के बिछिया पहिरावति प्यारी सखी परिहास बढ़ायो। प्रीतम ओरा समीप सदा बजैयो कहिके पहिले पहिरायो। कामिन कुंज चलावन को कर ऊंचो कियो पै चल्यो न चलायो।२९५। दोहा। प्रभात रोना लाल की परी कपोलन आनि। कहा छिपावत चतुर तिय कन्त दन्त छत जानि।२९६। दोहा। भुज फुले बलावत सखी कर चलाय मुसकाय। गाढ़े गयो उरोज पिय बिहंसी भौंह चढ़ाय।।२९७। अथ दूती लक्षण। दोहा। निपुण दूति तामें सदा दूती ताहि बखान। उत्तम मध्यम अधम यों तीन भांति सो जान।२९८। अथ उत्तम दूती लक्षण। दोहा। मोहे जो मन बोल के न कार बचन अभिराम। ताहि कहत कविराज यह उत्तम दूती नाम।।२९९। अथ उदाहरण। कवित्त। जा दिन मतिराम मुसक्यानि वाके देखे तुम ता दिन ते चढ़ी रही पिय पियराई पर। नेक उठि देखो बड़ेभाग हैं तिहारे लला मेलि राखो राधि के कन्हाई हिय राई पर। दूनी दुति छाई देह आई दुबरी पियराई लोन वारिये तिया की पियराई पर। भावत न भौन बनावति न आभरन है तन करति सुधानिधि सियराई पर।३००। दोहा। तिय के हिय के हनन को भयो पंच सर बीर। लाल तुम्हे बस करन को रहे न तरकस तीर।३०१। अथ मध्यम दूती लक्षण

॥ दोहा ॥ कछू बचन हित कर कहै बोलै अहित कछूक। मध्यम
दूती कहत हैं तासों सुकवि अचूक। ३०२। अथ उदाहरण। क-
वित्त। चरन धरे न भूमि विहरे जहां महां फूले हैं फूलनि विछायो
परियंक है। भार के डरन सुकुमारि चारु आंगनि में करति न।
अंगराग कुम कुम को बंक है। कवि मतिराम देखि वातायन।
बीच आयो आतप मलिन होत बदन मयंक है। कैसे वह बाल।
लाल बाहर विजन आवै विजन बयारि लागे चलनि कलंक
है। ३०३। दोहा। रीझि रही रिझवार वह तुम ऊपर ब्रज नाथ।
ज्यों सिंधुर की इन्दिरा कौं कर आवै हाथ। ३०४। अथ अधम
दूती लक्षण। दोहा। अधम दूतिका जानियो बचन कहै सतरा-
य। ग्रन्थन को मन देखि के बरनत हैं कविराय। ३०५। अथ उ-
दाहरण। कवित्त। जानत न कछूये कहावत रसिक एय लाव
न्याय नवही तिहारे यह टेक है। कूरनि की रीति है जो डेल ऐसो
डार देत मतिराम चतुराई चतुर लिये एक है। बोली न बोली
कहै कछू बोली सत राय वह मनसिज ओज को सुहानो क-
छुसे कहै। बातन सुनत अंगरात अलसात गात सोहै करि
नैन विहस्यो है भई न कहै। ३०६। दोहा। जोवन मोरडत।
आपनो अजो न जानत गात। सो तित में अति चटपटी नि-
पट अटपटी बात। ३०७। अथ भाव लक्षण। दोहा। लोचन
बचन प्रशाद मृदु हास वास घत मोद। इनते पर घट जानिये
बरनत सुमति विनोद। ३०८। दोहा। जिनने चित रुचि भा-
व को आछो अनुभव होय। रस सिंगार अनुभाव ते बर-
नत कवि सब कोय। ३०९। अथ भाव को उदाहरण। कवि-
त्त। गहि हाथ सों हाथ सहेली के साथ में आवति ही वृष

भान लली। मतिराम सु बाते आवत नीर निवारति भौंरन की। अवली। लखि के मन मोहन सों सकुची कह्यो चाहति आपनी ओट लली। चित चोर लिया दृग जोरि तिया मुख मोरि कछू मुसक्याय चली। दोहा। ३९०। सहज बात बूझत कछू बिहसि नवाई ग्रीव। तरुन हिये तरुनी दई नये नेह की सीव। ३९१। अथ अनुभाव लक्षण। दोहा। ते अनुभावहि जानियो जो हैं सात्विक भाव। रस ग्रंथन अवलोकि के बरनत सब कविराव। ।३९२। दोहा। स्तंभ स्वेद रोमांच स्वर भंग कम्प वैवर्ण्य। आंसू और प्रलाप कहि आठो ग्रंथनि निर्णय। ३९३। अथ स्तम्भ। लक्षण। दोहा। लज्जा हर्षादिकन तें अचल होत जहं अङ्ग। स्तम्भ कहत कवि ताति को जे प्रवीन रस रङ्ग। ।३९४। अथ उदाहरण। ।कवित्त। देखत ही मतिराम रसाल गही मति प्यारी की प्रेमनि गाढ़ी। चाहिवे की चित चाह भई हिये में कुलकान की काननि काढ़ी। पाई परे मनमें न मरू के भई मिस लाज निकारि फिर ठाढ़ी। संग सखी न के जानि दुरावत आनन आनन्द की रुचि बाढ़ी। ।३९५। दोहा। पाय कुञ्ज एकान्त में अंक भरी ब्रजनाथ। एकन को नियं करति है कह्यो करत नहिं हाथ। ३९६। । अथ स्वेद लक्षण। दोहा। हरषि लाज भय कोप श्रम इत्यादिक ते होय। पानी प्रगटत देह ते स्वेद कहावत सोय। ३९७। उदाहरण। कवित्त। किंकिनि नेवर की झनकारनि चारु पसारि महा रस जालहि। काम कलोलनि में मतिराम कलानि निहाल कियो नंदलालहि। स्वेद के वृन्द लसे तन में रति अंतर ही लपटाय गोपालहि। मानो चली मुकताफल पूजन हेमलता लपटायी तमालहि। ३९८। दोहा। कुच तें श्रम जलधार चलि

मिल रोमावलि रंग। मनो मेरु गिर तर हटो भयो सिला सिन संग। ।३१९। अथ रोमांच लक्षण। दोहा। हरष भयादिक ते प्रगट। रोम उमग जो अंग। ताहि कहत रोमांच हैं कवि जन सुमति उतङ्ग। ।३२०। अथ उदाहरण। कवित्त। चन्द्र मुखी हांसी में। चमेली की लतासी होति चम्पक लतासी जोति अंगन धरनि है। कवि मतिराम तेरी अंग की सुवास लहे को नवेली ऐसी बात जानी न परति है। ने सुक निहारे ते नवेली नैन कोरनि सो कैसी अद्भुत की कलानि उच्चरति है। सुन्दर ललित माल श्याम रसिक रसाल सों कदम्ब तें पुलकि सु कूलनि सों करति है।३२१। दोहा। जौन अङ्ग दिग है कढ़ी छुई छैल की चाह। अबहूं लों अवलोकिये पुलक पटलता ताहि।३२२। अथ स्वर भंग लक्षण। दोहा। क्रोध हर्ष मद भीत तें बचन और बिधि होय। ताहि कहत स्वर भंग हैं कवि कोविद सब कोय।३२३। अथ उदाहरण। कवित्त। ताहि लै आई अली रति मन्दिर जाकी लगे रतिहू परछांहीं। आय गयो मतिराम तहों जिन कोटिन काम कला सब गाहीं। देखत ही सिगरी बपुरी पकरी हँसि पै तिया की पिया। बाहीं। लाजन तें स्वर भंग भई सो कही मुख चन्द मरू करि। नाहीं।३२४। दोहा। कहा जनावत चातुरी कहा चढ़ावति भौंह। अध निकोरे अँखियानि सों सोहें कीजति सौंह।३२५। अथ। कम्प लक्षण। दोहा। क्रोध हर्ष भय आदि तें थर थरात ज्यों देह। ताहि कम्प यों कहत हैं कवि कोविद मति गेह।३२६।। अथ उदाहरण। कवित्त। चन्द मुखी अरबिन्द की मालनि गूंथनि रूप अनूप बिगास्यो। काम स्वरूप तहां मतिराम। अनन्द सों नन्द कुमार सिधास्यो। देखत कम्प छुट्यो तिन

के मन यों चतुराई को बोल उचास्यो। सीरे सरोज लगी सजनी कर कंपत आन न हार संवास्यो।३२७। दोहा। लाल बदन लखि लाल के कुचन कम्प रुचि होति। चपल होत चकवा मनो चाहि चंद की ज्योति।३२८। अथ वैवर्ण्यलक्षण। दोहा। मोह क्रोध भय आदि तें बरन और विधि होय। ताहि कहत वैवर्ण्य हैं सकल सयाने लोय। ३२९। अथ उदाहरण। कवित्त। छल सों छबीली कों सहेलिनि लिवाय करि ऊपर अटारी रूप रच्यो जाय ख्याल को। कवि मति राम भूषननि की झनक सुनि चाहि यों चपल चित रसिक रसाल को। अली चली सकल अलोक सिसकारि करि आवत निहारि करि मदन गोपाल को। लालन कों इन्दु सो बदन अवलोकि अर विन्द सो बदन कुम्हिलाइ गयो बाल को। ।३३०। दोहा। बाल रही इक टक निरखि लाल बदन अरविन्द। सियराई नैननि परी पियराई मुख चन्द। ३३१। अथ अश्रुतका लक्षण। दोहा। हर्ष दुक्ख भय आदि तें जल। आवै अखियानि। ताहि बखानत अश्रु कहि ग्रंथन को मत जानि।३३२। अथ उदाहरण। कवित्त। बैठे हुते लाल। मनमोहन मोहनी बाल छिनकु सकुच राखे गुरुजन भीर को। कवि मति राम दीठ और की बचाय देखे देखतहीं। और भय राखे अवधीर को। तन को न मोह धरे मन। की खबर भूली आंखिन सों छायो पुर आनन्द के नीर। को। उमंगि हिये तें आयो प्रेम को प्रवाह तातें लाज गिर परी जैसे नर वर तीर को।३३३। दोहा। बिन देखे को चले दुख सुख को देखे जाहि। कहो लाल इन दृगनि के अंसुवा क्यों ठहराइ।३३४। अथ प्रलय का लक्षण। दोहा।+।

जीव इतन में ह्वान हैं येही सकल निरोध। हर्ष दुक्ख भय आदि तें प्रथम कह्यनिर्मान प्रोध। उदाहरण। कवित्त। जादिन तें छबि सों मुसक्यात कहा निरखे नन्दलाल बिलासी। ता छिन तें मन। हीं मन में मनिराम पियै मुसक्यान सुधासी। नेकु निमेखन लागत नैननि चौंकि चितै तिय देव तियासी। चन्द मुखी नेह लैन चले चिरवात निवास में दीप सिखासी। ३३६। दोहा। तोसें अनसिख में नता मोहन मूरति सेन। अनसिख नैन सुनैन ये निरखत अनमिष नैन। ३३७। अथ जम्भा लक्षण। दोहा। जम्भा को कवि कहत हैं नवमों सात्विक भाव। उपजै आलस आदि तें वरनत सब कवि राव। ३३८। अथ उदाहरण। कवित्त। केलि करि। सकल रीति प्रात उठी अलसात नींद भरे लोचन जुगल बिलसतु हैं। लाजनि तें अंगनि दुरावति हैं बार बार खैंचि करि बसन। बिहारी बिहसतु हैं। कवि मनिराम आई आलस जम्हाई मुख। ऐसो मन भावती की छबि सरसतु हैं। अरुन उद्योत मानौ सोभा के सरोवर में प्रोभा मानि शोभा को मराज बिकसतु हैं। ३३९। दोहा। आयो पीव बिदेस तें बहुतक दिवस बिताय। सखी उठाई पास तें सांझहिं तें जमुहाय। ३४०। अथ शृंगार लक्षण। दोहा। जो बरनत तिय पुरुष को कवि कोविद रति भाव। तासों रीझत सु कवि हैं सो सिंगार रस राव। ३४१। दोहा। कहि सिंगार रस भाव है प्रथम कहत संयोग। ग्रंथनि को मत देखि कै दूजो कहत बियोग। ३४२। अथ संयोग लक्षण। दोहा। प्रमुदित नायक नायका जहां सिंगार में होय। सोइ संयोग सिंगार रस। बरनत सुमति उदोय। अथ उदाहरण। कवित्त। प्रान पिया। पिय आनन्द सों बिपरीति रची रति रंग रह्यो है। काम कलो-

लनि में मति राम रह्यो धनि यों कल किंकिनि को है। आनन की
उजियारी परी अम बिन्द सरोज उरोज लसो है। चन्द की चांदनि
के परसे मनो चन्द पखाव पहार चलो है। ३४४। दोहा। छुवति
परस्पर हेरिके राधा नन्द किशोर। सब में दोही होति हैं चोर।
मिहचनी चोर। ३४५। अथ हाव लक्षण। दोहा। नारिन को।
शृंगार में यहाँ कहैं अब हाव। ते संयोग सिंगार में बरणत
हैं कवि राव। ३४६। अथ विछिप्त लक्षण। दोहा। लीला प्रथ-
म विलास पुनि त्यों विक्षिप्त बखानि। विभ्रम किल किंचित
बहुरि मोटा इन उर आनि। ३४७। कुट्टमित लक्षण। दोहा। ब-
हुरि कुट्टमित कहत हैं पुनि विव्वोक बखानि। ललित बरन पु-
नि बिहँसि कहि सकल हाव दश जानि। ३४८। अथ लीला हा-
व लक्षण। दोहा। पिय भूषण बचनादि की लीला करै जो।
बाल। तासों लीलाहाव कहि बरणत सुमति रसाल। ३४९।
उदाहरण। कवित्त। प्यार पगी पगरी पिय की धरि भीतर आप-
न शीश संवारी। एते में आगन तें उठि के तहं आय गयो मति-
राम बिहारी। देखि उतावल लागी प्रिया पिय सोंहनि सों बहुत्यो
न उतारी। नैननि बाल लजाय रही मुसक्याय लई उर लाय पि-
यारी। ३५०। दोहा। सेरसिर कैसी लगै यों कहि बांधी पाग।
सुन्दरि रति विपरीति में कियो प्रगट अनुराग। ३५१। अथ वि-
लास लक्षण। दोहा। गमन नयन बचनानि में होनजु कछुक
विशेष। बरणत ताहि बिलास कहि रस मय सु कवि अलेष।
।३५२। अथ उदाहरण। कवित्त। किंकिनि कलित कल नूपुर
ललित रव गौन तेरो देखि कै सकति करि गौन को। मृदुमु-
स क्यानि मुख चन्द चांदनी सों राखि कै उज्यारो धाम नाम।

राम द्वारा भौन को। सहज सुभावन सों मोहन के भावन सो हरति हैं कवि मति राम मन रान को। रूप मद छकी अनि छबि सो छबीली देति तिरछी चितौनि मैन बरछी सी कान को। ३५३। दोहा। नैन चलनि चितौन मृदु मधुर मन्द मुसक्यानि। छाय रही लखि लाल की सखि ध्यान मिस अँखियानि। ३५४। अथ विक्षिप्त लक्षण। दोहा। थोड़ेही भूषण बसन जहँ शोभा सरसाय।। ताहि कहत विक्षिप्त हैं जे प्रवीण कवि राय। ३५५। उदाहरण। ।कवित्त। बारने सकल एक रोरी ही की आड़ पर हाहा न पहरि आभरन और अङ्ग में। कवि मति राम जैसे तीक्षण कटाक्ष तेरे ऐसे कहा सरस हैं अनंग के निखंग में। सहज सरूप मुघराई। रीझो मनु मेरो बुझि रह्यौ देखि रूप अद्भुत की तरङ्ग में। सेत। सारीही सों सब सोंतो रंग्यो श्याम रंग मन सारीही में श्याम रंगलाल रंग में। ३५६। दोहा। नथनी गज मुक्तान की लसति चारु श्रृङ्गार। जिन येही सुकमार तन और आभरन भार। ३५७। विभ्रम लक्षण। दोहा। उलट भूषण बसन को होत जहाँ पहिराव। तासों विभ्रम हाव कहि बखानत हैं कवि राव। ३५८। अथ उदाहरण। कवित्त। सांझहि ते चलि आवत जान जहाँ तहँ लोगनि हूं न डरोंगी। प्रीतम सों रति ही यह रूप धोयेहैं कहाँ जब अङ्ग भरोंगी। जानति हौं मतिराम नऊ चतुराई की बात निहीय धरोंगी। किंकिनि के उर हार किये तुम कौन सों जाय विहार करोंगी। ३५९। दोहा। अति आतुर ह्वै चल भई अली कौन के भाग। उलटी कंचुक कुचनि पर कहैं देत अनुराग ।३६०। अथ किल किंचित्त लक्षण। दोहा। हरष गरब अभिलाख श्रम हास रोस अरु भीति। होत एकही बार है किल किं

चित की रीति। ३६१। अथ उदाहरण। कवित्त। लालन बाल के। द्वैही दिनावैं परी मन आइ मनेही की फाँसी। काम कलोलिनि में मतिराम लगी मानों बातन मोद की आँसी। प्रीतम के उर बीज भयो दुलही के विलास मनोज की गाँसी। स्वेद बढ्योतन कम्प उरोजनि आँखिन आँसु कपोलन हाँसी। ३६२। दोहा। सकुचित रहिये सांवरे सुनि गरबीले बोल। चढ़ति भौंह बिकसत नयन विहँसत गोल कपोल। ३६३। अथ मोटाइत लक्षण। दोहा। बातन को प्रगटन भयो पुनि मिलाप की चाह। सो मोटाइत जानिये बरनत सब कवि नाह। ३६४। अथ उदाहरण। कवित्त। फूलि रहे द्रुम वेलिन सों मिलि पूरि रही अँखियां रत नारी। मोंहि अकेली विलोक यहां कछु और इसी भई दीठि निहारी। जैसी हुती हम सों तुमसों अब होयगी ऐसीये प्रीति निहारी। चाहत जो चित में हित तो जिन बोलिये कुंजन बीच बिहारी। ३६५। दोहा। झूठे हूं जग में लग्यो मोंहिं कलंक गोपाल। सपनेहूं कबहूं हिये लगे न तुम नन्द लाल। ३६६। कुट्टमित हास लक्षण। दोहा। जहां दुक्ख अरु सुक्ख कों प्रगट करै त्रिय बाम। परम ललित यह हाव। तहं कुट्टमित्त यह नाम। ३६७। उदाहरण। कवित्त। सोने की। सी बेलि अति सुन्दरि नवेली बाल होत ठाढ़ी हीं अकेली अलबेली द्वार महियां। मतिराम आँखिन सुधा की बरषा सी भई गई जब दीठ वाके मुख चन्द पहियां। नेकु नीरे जाय करि बातनि लगाइ करि कछु मन पाय करि आय गही बहियां। सैनन। में बरचि लई गातन में थकित भई नैनन में चाह कौ बैनन में नहियां। ३६८। दोहा। प्रीतम कोमल भावती मिलनि बांह देकंठ। वांही छूटे न कंठ तें नाहीं छूटे न कण्ठ। ३६९।

अथ बिव्वोक लक्षण। दोहा। जो पिय के अभिमान तें करति अना-
दर बाम । ताहि कहत बिब्बोक हैं जे प्रवीन गुण धाम। ३७०।
।अथ उदाहरण। कवित्त। मानहूं आयो है राज कहूं चढ़ि बैठ्यो
है ऐसे पलास के खोढ़े। गुञ्ज गरें सिर मोर परवा मतिराम हूं गा-
य चरावन छोड़े। मोतिन को मेरो हार गहे हाथनि सो रही चूनरी
ओढ़े। ऐसे ही डोलत छैल भये तुम्हें लाज न आवत कामरी ओ-
ढ़े।३७१। दोहा। प्रान पियारो पग परयो तू नलखति यह ओर।
ऐसो उरज कठोर नो न्याय ही उरज कठोर। ३७२। अथ ललित हा-
व लक्षण। दोहा। बनै मानि कन सों सरस सकल आभरन अं-
ग। ललित हाव तासों कहत जे कवि बुद्ध उतंग। ३७३। अथ उ-
दाहरण। कवित्त। मन्द गयन्द की चाल चले कट किंकिनि नेवर
की धुनि बाजे। मोती के हारनि मय हियरा हरिजू हुलास बि-
रान्न साजे। सारी सुही मति राम लसै मुख संग की नारी कीयों
छवि छाजे। पूरण चन्द पियूष मयूष मनो परि बेष की रेख बिरा-
जै।३७४। दोहा। बिरी अधर अंजन नयन मेहदी पग अरुपानि
तन कञ्चन के आभरन नीठि परे पहिचानि। ३७५। अथ बीहत
लक्षण। दोहा। जो परि पूरण होत नहिं सिय समीप अभिले-
ष। ताको बिसल बुखानियो जिन की कविता देख। ३७६। अ-
थ उदाहरण। कवित्त। सकल सहेलिन के पीछे २ डोलति है म-
न्द मन्द गौनु आजु आपुही करतु है। सनमुख होत मुख होत।
मति राम जबै पोन लागे घूंघट को पट उघरतु है। यमुनाके तट
बंशी बट के निकट नन्दलाल पै सकुचनि तें चार ह्यो न पर-
तुहै ।तन तो तिया को बर भांवरे भरत मन सांवरे बदन पर मां-
वरे भरतु है। ३७७। दोहा। रूप सांचरो बदन पर सुधा सिं-

धुमें खेल। लखिन सकै अँखियाँ सखी परी लाज की जेल।
३७८। अथ वियोग शृंगार भेद। दोहा। प्यारी पीउ मिलाप बिन
होत नहीं आनन्द। सो वियोग सिंगार कों बरनत सब कवि वृन्द
।३७९। अथ वियोग को भेद। दोहा। कही पूर्व अनुराग अरु
मान प्रवास विचार। रस सिंगार वियोग के तीनि भेद निरधार।
३८०। अथ पूर्व अनुराग लक्षण। दोहा। जो पहिले देखे सुने
बाढ़े प्रेम की लाग। बिन मिलाप जो बिकलता सो पूर्व अनुराग
।३८१। अथ उदाहरण। कवित्त। न्यौते गये काहु नेह बढ्यो मति।
राम दुहू के लगे दृग गाढ़े। लाल चले सैनि के घर कों तिय अङ्ग
अनङ्ग की आग सौं डाढ़े। ऊँचे अटा पर काँधे सहेली के।
ठोढ़ी दिये चितवै दुख बाढ़े। मोहन जो मन गाढ़े करै पग द्वैके
चले फिरि होत हैं ठाढ़े। ३८२। दोहा। निरख्यो नेह दुहून की
नई दई यह बात। सूखति देह दुहून की त्यों पानी सर सात
।३८३। अथ मान भेद। दोहा। मान कहत हैं तीनि बिधि
लघु मध्यम गुरु भाम। तिन के भेद बनाय के बरनत क-
वि मति राम। ३८४। अथ लघुमान भेद। दोहा। और बा-
म कौं लखन जहँ लखै कन्त को बाल। बरनत हैं लघुमा-
न सौं छूटत तन कहि ख्याल। ३८५। अथ उदाहरण। कवि-
त्त। देखति और तिया पिय कों लखि मान छबीली के नैन-
नि छायो। प्रीतम यौं चतुराई करी मतिराम कछू परिहा-
स बढ़ायो। रीति रची बिपरीति जो प्रीतम ताको कवित्त
बनाय सुनायो। भूलि गई रिस लाजनि तें मुसक्याय प्रि-
या मुख नीचे को नायो। ३८६। दोहा। मान जनावति स-
खनि कों मनन मान की ठाट। बल्लभ नावल कों लखैं लाल

निहारी बाट।३८७। अथ मध्यम मान लक्षण। दोहा। पिय मुख औरै नारि को सुनै नाम जहं नारि। होत मान मध्यम तहां बरनत सु कवि बिचारि।३८८। अथ उदाहरण। कवित्त। दोऊ आनन्द सों आंगन मांझ बिराजैं असाढ़ की सांझ सुहाई। प्यारी के पूछत और तिया को अचानक नाम लियो रसिकाई। आयो बनै मुंह में हंसि कोऊ तिया सर चाप सों भौंहैं चढ़ाई। आंखिन तें गिरे आंसू के बूंद सुहास गयो उड़ि हंस की नाई।३८९। दोहा। भई देवता भाव सब वह तुम को बलि जाउं। वाही को मन ध्यान है वोही को मुख नाउं।३९०। अथ गुरु मान लक्षण। दोहा। बोलत और तियान सों पिय को देखै बाम। होत तहां गुरु मान है बरनत कवि मति राम।३९१। अथ उदाहरण। कवित्त। तेरे प्राण प्यारे कहूं सहज सुभाव प्यारी कहा भो कही जो कछु बात काहू बाल सों। कवि मति राम मेरो कह्यो उर आनि। आली हानी जन मान ऐसे मदन गोपाल सों। ताको ऐसी रिस करि अयान नीकी रीति तूतो दीप की सी ज्योति जग योबन रसाल सों। भौंहैं करि रूंधी बिहसो है करि कपोल गोल सोहैं करि लोचन रसो हैं नन्दलाल सों।३९२। दोहा। बहु नायक सों बात में मान भलो न सयान। दुख सागर में बूड़ि है बांधि गरे गुरु मान।३९३। अथ प्रवास लक्षणम्। दोहा। प्रीतम बसे बिदेश में बिरह जहां सरसाइ। बरणत तहां प्रवास है जे प्रवीन कविराय।३९४। अथ उदाहरण। कवित्त। घुरवान की धावन मानो अनंग तुरंग धुजा फहरान लगी। मतिराम समीर लगें लतिका बिरही बनिता थहरान लगी। मन में अल है क्षिति में अलछैं चपला की छटा छहरान लगी। परदेश में पीउ संदेश

न पायो पयोधि घरा घहरान लगी । ३९५ । दोहा । चलत लाल कैं में कियो सजनी हियो परवान । कहा करौं दरकत नहीं इतैं वियोग कृसान । ३९६ । अथ वियोग श्रृंगार दशा कथन । दोहा । हौं कि वियोग श्रृंगार में अगर दशा नव जानि । प्रथम कहैं अभिलाष पुनि चिन्ता स्मृति मन मानि । ३९७ । दोहा । गुन वर्णन । उद्वेग पुनि कहि प्रलाप उन्माद । व्याधि बहुरि जड़ता कहत कवि कोविद अविवाद । ३९८ । अथ अभिलाष लक्षण । दोहा । ताहि कहत अभिलाष हैं ज्यों मिलाप की चाह । प्रेम कथन तें जानियें बरनत सब कविनाह । ३९९ । अथ उदाहरण । कवित्त । मोर पखा मतिराम किरीट मनोहर मूरति सो सजु । लैगो । कुण्डल लोलनि गोल कपोलनि बोलनि नेह के बीजनि वैगो । लोल विलोचनि कोरनि सों मुसक्याय इतै अरु । आय चितैगो । एक घरी घन से तन सों अँखियानि घनो घन सारसौं देगो । ४०० । दोहा । मो मन सकलौ उड़ि गयो । अब केहुं न पत्याइ । बसि मोहन बन माल में रह्यो बनाय । बनाय । ४०१ । अथ चिन्ता लक्षण । दोहा । दरशन सुख । की भावना करै चित्त की चाव । चिन्ता तासौं कहत हैं जे प्रवीन कवि राव । ४०२ । उदाहरण कवित्त । जैहो अकेली महा । बन बीच तहां मतिराम अकेलोई आवें । आपने आनन चन्द की चांदनी सौं पहिले तन ताप बुझावें । कूल कालिन्दी के । कुंजन मंजुन मौरि अमोल वे बोल सुनावें । ज्यौं हंसि हेरि लियो हियरा हरि ज्यौं हंसि जो हियरो हरि लावें । ४०३ । दोहा । । काम कहा कुल कानि सौं लोक लाज किन जाइ । कुञ्ज बिहारी कुञ्ज में मिलैं मोहि मुसक्याय । ४०४ । स्मृति लक्षण । दोहा ।

सखी सुनी प्रिय बात कौं जो सुमरन मन होय। स्मृति तासों कवि कहत हैं सब रस ग्रन्थ बिलोय।५०५। अथ उदाहरण। कवित्त। आलस वलन कोरों काजर कलित मतिराम वै ललित अति पायन धरत हैं। पंकज तें सरस हैं खंजन जुरन कों गरब लें मृगनि ते दृगनि दरसत हैं। परु निस घन वंक तीक्षन कटाक्ष बड़े लोचन विशाल उर पीरहि करतु हैं। गाढे ह्वै पड़े हैं न निसारे निसरत सें नवीन मै बिसारे न बिसारे बिसरतु हैं।५०६। दोहा। शोभा सौं रति सुन्दरी नव सनेह सों बाम। तन बूड़त मन प्रीति में रंग बूड़त मन श्याम।५०७। अथ गुण वर्णन। दोहा। विरहा बीच जो पीय कौ सुन्दरता बिसराय। गुण वर्णन तासो कहत जे प्रवीन कबिराय।५०८। अथ उदाहरण। कवित्त। मोर पंखी मतिराम किरीट में कण्ठ बनी बनमाल सुहाई। मोहन की मुसक्यान मनोहर कुण्डल लोलनि में छबि छाई। लोचन लोल बिशाल बिलोचनि कोन बिलोकि भयो बस माई।। वा मुख की मधुराई कहा कहौं मीठी लगें अँखियानि लुभाई।५०९। दोहा। सरद चन्द की चाँदनी नारि डारि किन मोहि। वा मुख की मुसक्यानि सरि कबहुं कहों नहिं तोहि।५१०।+। अथ उद्वेग लक्षण। दोहा। विरह बिथा की बिकलता जहाँ कछू न सुहाय। ताहि कहत उद्वेग हैं जे प्रवीन कबिराय।५११। अथ उदाहरण। कवित्त। चाहि तुम्हें मतिराम रसाल परी तिय के तन में पियराई। काम के तीक्षन तीरन सों भरि मारत। नीर भयो हियराई। नेरे बिलोकि वे को उत कण्ठत कण्ठ। लों आय रह्यो जिय गई। नेकु परे न मनोज के ओजनि सेज मसोजन में सियराई।५१२। दोहा। जे अङ्गनि पिय संग में बर-

वत हुते पियूष । ते बिछुरे बिछुरा कै से भये मयंक मयूष । ४१३ ।
अथ प्रलाप लक्षण । दोहा । उन करारते कहत हैं जहाँ मोह मय बैन । बरनत जहाँ प्रलाप हैं जे प्रवीन रस ऐन । ४१४ ।
अथ प्रलाप उदाहरण । कवित्त । कढ़ियो सन्देशो प्राण प्यारी सौं गवन कीन्हौं बिक्रम बिलास जैवं आपने परम कें । चन्द कार बरछी नि छेदि हार्यो तीर तीक्षन मनोज के कछु न करि न सकें । कवि मतिराम या कुलिश के धाइ कहूं मान तुम कोकिल का कूकनि सकें । कैसे दरकत मेरो हियो सदा महि रह्यो नेरे कुचनि पट कठोरनि कमर सकें । ४२५ । दोहा । बिकल लाल को वाल तू क्यों न दिलोकति आन । बोलि के किलनी सों कहैं बोलि तिहारे तानि । ४१६ । अथ उन्माद लक्षण । दोहा । उत करारते मोह मय वृथा कहत कछु काज । ताहि कहत उन्माद हैं कवि कोविद सिर ताज । ४१७ । अथ उदाहरण । ० ।
। कवित्त । जा छिन तें मतिराम कहूं मुसक्यात कहूं निरख्यो नंदलालहि । ता छिन तें छिनही छिन में छिन बाढ़ि बिथाह वियोग को वालहि । यों छति है किसलय करसों गहि बूझति स्याम शरीर गोपालहि । भोरी भई है मयङ्क मुखी भरि भेटत है भुज अंक तमालहि । ४१८ । दो० । रोय उठे छिन उठि हँसे छिन उठ चले रिसाय । बैरी करी बनाइ ते लायक रूप ठगाय । ४२६ । अथ व्याधि लक्षण । दोहा । काम पीर तें पिय रह्यो ताप दूवरो होय । तासों व्याधि बखान हैं कवि कोविद सब कोय । अथ उदाहरण ।
। कवित्त । बरषा सी लागी निशि बासर बिलोकनि वाख्यो परवाह भयो नावनि उतारिबो । रह्यो जात कौन पै सुकवि मतिराम अब बिरह अनल ज्वाल जालनि सें जरिबो ।

जैयत से मोपे को उड़ैयत सों उसासनि सौं हम को तो भयो उन हेरत हेरिबो। कियो कहा चाहत सो कहौ न कुंवर कान्ह रह्यो अब वाको उचारन को करिबो ।४२१। दोहा। देखि परे नहिं दूबरी सुनिये श्याम सुजान। जानि परे परि जंक में अंग आंच अनुमान ।४२२। अथ जड़ता लक्षणं। उत्कण्ठादिक ते जो है अचल चित्त अरु अंग। तासों जड़ता कहत हैं जे प्रवीन रस रंग।४२३। ।उदाहरण। कवित्त। सूंघै न सुवास रहै रंग राग तें उदास भूल गई सुरति सकल खान पान की। कवि मतिराम इक टक अन मिष नैनन बूझे न कहत बात अरु समझे न आन की। थोरी सो हसनि ओट गोरी ऐसी डारी ठग दौरी करी गोरी तें किशोरी वृषभान की। तब तें बिहारी वह है भई बखान कैसी जब तें निहारी रुचि मोर के पखान की।४२४। दोहा। अन मिष लोचन बाल के यातें नन्द कुमार। मीच गई जरि बीचही विरहानल की झार ।४२५। समुझि समुझि सब रीझि है सज्जन सु कवि समाज। रसिकन कों रस कों कियो नयो ग्रंथ रसराज।४२६।

इति श्री रसराज ग्रन्थ समाप्तः